इस अंक में

			पृष्ठ सं.
	अपनी ओर से	सम्पादकीय	
लेख	राष्ट्रीय एकता हेतु हिन्दी एक माध्यम	सुरेन्द्र शर्मा	
लेख	कश्मीर की चित्रकला	मोहन कृष्ण रैना	
कविता	निःश्वास (1-2)	अशोक 'खामोश'	
कविता	मैंने देखा	शिबन तिकू	
कविता	प्रश्न — ?	संतोष	
अफ़साना	लमहों की राख	डॉ. ब्रिज प्रेमी	
ग़ज़ल	ग़ज़ल	सुभाष प्रेमी 'सुमन'	
कविता	ओ अभिशप्त अहिल्या!	नरेन्द्र शर्मा	
कविता	भूली कविता	मन मोहन लाल गुप्ता	
लेख	कवि कुल गुरु कालीदास	राज नाथ	
ग़ज़ल	ग़ज़ल	मुहम्मद अमीन मखदूमी	
कविता	चेतावनी	मोती लाल 'चातक'	
लेख	नृत्य एक परम्परा	शफी मुहम्मद मीर	
कहानी	बदनसीब	बाल कृष्ण मेघ	
कविता	अक्षर का सत्य	मोहन कृष्ण कौल	
कविता	मेरे गीत	मोहन कृष्ण कौल	
कविता	भौतिक कम्पयूटर	संतोष लंगर	
कविता	ऋतुराज की ओर	बसन्ती भान	
कविता	मधुर यादें	अशोक कुमार चिर्वी	
कविता	अतीत की परछाइयां	बाल कृष्ण 'सन्यासी'	
कहानी	चन्दा	राजेन्द्र कुमार च्रंगू	
	राज भाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए प्रोत्साहन	....	

अपनी ओर से

'दशम सेतु' का यह अंक पाठकों और सहृदयों के लिए मंगल कामना के साथ आ रहा है। कार्यालय में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग हेतु पत्रिका 'दशम सेतु' एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हिन्दी को देश की राजभाषा के रूप में अपनाया गया है जिसके फलस्वरूप हिन्दी न केवल एक कड़ी के रूप में सहायक सिद्ध हो रही है अपितु देश की एकता और अखंडता बनाए रखने में अत्यधिक योगदान भी दे रही है।

साहित्य एक अथाह और गम्भीर सागर की भांति है जिसमें भिन्न-2 विचारधाराएं रूपी नदियां प्रवेश करके अपना अस्तित्व खो बैठती हैं और विशाल जलराशि के साथ एकीभूत हो जाती हैं। साहित्य समाज का दर्पण तो है ही किन्तु समाज को एक निश्चित दिशा प्रदान करके उसका मार्गदर्शन भी करता है। इस कारण साहित्य को पनपने के लिए अनुकूल परिस्थितियों को उपजाना सहृदयों का कर्तव्य है।

अन्त में फिर से पाठकों के लिए मंगलकामना के साथ उनकी भावना उजागर करने तथा जानने हेतु पत्रिका 'दशम सेतु' का यह अंक एक प्रश्नात्मक चिन्ह (?) लिए आ रहा है।

राष्ट्रीय एकता हेतु हिन्दी एक माध्यम

सुरेन्द्र शर्मा

किसी भी देश की एकता एवं अखण्डता बनाये रखने में उस देश की राष्ट्रभाषा मुख्य भूमिका निभाती है। राष्ट्रभाषा सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांधे रखने का कार्य करती है। जिससे सभी देशवासी एक दूसरे के प्रति अपनत्व की भावना अनुभव करते हैं और उनमें एकत्व की भावना प्रबल होती है।

26 जनवरी 1950 को जब हमारे देश का संविधान लागू हुआ तो इसमें हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान दिया गया। संविधान के निर्माताओं ने देश के जनसाधारण एवं देश दोनों के हितों को ध्यान में रखकर ही यह निर्णय लिया था। इसका कारण यह है कि भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। ऐसे में किसी ऐसी भाषा की आवश्यकता अनुभव होती जो भारत की सारी जनता की समझ में आसानी से आ जाये। वह भाषा हिन्दी ही हो सकती है। क्योंकि हिन्दी अधिकांश भारत में बोली या समझी जाती है। यदि कुछेक प्रदेशों के लोग इसे बोलने या समझने में कुछ कठिनाई भी अनुभव करते हैं तो वे भी इसे बड़ी सहजता से सीख सकते हैं।

किसी भी देश की जनता का आपस में लगातार सम्पर्क में रहना अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि जनसम्पर्क देश की जनता में ऐक्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिये जनसम्पर्क स्थापित करने के लिये सहज ही किसी ऐसी भाषा की आवश्यकता पड़ती है जो हर देशवासी सुगमता से बोल या समझ सके। यदि किसी को इसे सीखने की आवश्यकता हो तो वह इसे आसानी से सीख सके। हमारे देश में ऐसी भाषा हिन्दी ही हो सकती है। हिन्दी के माध्यम से भारत के एक कोने का व्यक्ति दूसरे कोने के व्यक्ति के साथ आसानी से सम्पर्क बना सकता है, जो देश की एकता एवं अखण्डता के लिये अत्यधिक सहायक सिद्ध होगा। जबकि अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से भारतीय जनसाधारण के लिये आपस में सम्पर्क स्थापित करना पूर्णतया असम्भव है।

यदि हम किसी अन्य प्रदेश में जायें तो स्वाभाविक ही है कि हमें उस प्रदेश की जनता के साथ सम्पर्क स्थापित करने के लिये किसी ऐसी भाषा का सहारा लेना पड़ेगा जो हमारी एवं उस प्रदेश की जनता की समझ में आसानी से आ जाये। यदि ऐसा न होगा तो हम केवल प्रदेशीयता की भावना के साथ जुड़े रहेंगे और अपने ही प्रदेश के किसी व्यक्ति के साथ समय व्यतीत करना पसन्द करेंगे। यदि सारा देश हिन्दी जानता होगा तो किसी भी प्रदेश का व्यक्ति किसी भी अन्य प्रदेश के व्यक्ति के साथ आसानी से सम्पर्क बना सकेगा तथा वह किसी भी प्रदेश में रहे वह सब में अपनत्व की भावना अनुभव करेगा जिससे देश की एकता एवं अखण्डता बनाये रखने में सहायता मिलेगी।

कुछ लोग हिन्दी के बजाय अंग्रेजी को प्राथमिकता देते हैं। लेकिन संभवतः वे या तो इस सत्य से अपरिचित हैं या वे इसे झुठलाना चाहते हैं कि अंग्रेजी हिन्दी का स्थान कतई नहीं ले सकती। इसका कारण यह है कि अंग्रेजी एक विदेशी भाषा है और केवल भारत के उच्चवर्ग तक ही सीमित है। इसका किसी भी भारतीय भाषा के साथ किसी प्रकार का कोई भी समन्वय नहीं है। देश का जनसाधारण इसे बोलने या समझने में पूर्णतया असमर्थ है। जबकि हिन्दी भारत की अपनी भाषा है जिसे अधिकांश भारत में बोला या समझा जाता है। इसके अलावा यह अन्य भारतीय भाषाओं के अत्यधिक निकट है। इस तरह हिन्दी ही एकमात्र भाषा है जो देश में एकता बनाये रखने में एक माध्यम बन सकती है।

अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि देश की एकता बनाये रखने में जो योगदान हिन्दी दे सकती है वह कोई विदेशी या क्षेत्रीय भाषा देने में असमर्थ है। लेकिन जैसे कि प्रारम्भ में उल्लेख हो चुका कि हिन्दी भी सम्पूर्ण भारतवर्ष में बोलचाल की भाषा नहीं है, अतः जब तक भारत के हर कोने का व्यक्ति इसे सीख नहीं लेता राष्ट्रीय एकता बनाये रखने में कठिनाई आयेगी। अतः सरकार को हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार में अपना पूरा योगदान देना पड़ेगा।

ऐसा केवल हमारे यहां ही नहीं है कि जिसकी कोई ऐसी भाषा नहीं है जो सम्पूर्ण देश में बोली जाती हो। विश्व के कई अन्य देश भी ऐसे हैं जिनकी कोई ऐसी भाषा नेहीं है जो सारे देश में बोली जाती हो। फिर भी उन देशों में राष्ट्रभाषा सभी को सीखनी पड़ती है।

उदाहरण के तौर पर हम रूस को ही ले सकते हैं। रूस विश्व का सबसे बड़ा देश है जो एशिया और यूरोप के अधिकांश क्षेत्र में फैला हुआ है। स्वाभाविक ही है कि वहां भिन्न-भिन्न प्रदेशों की जनता विभिन्न प्रकार की भाषायें बोलती है। ऐसा होते हुये भी वहां की राष्ट्रभाषा 'रूसी' सभी देशवासी जानते हैं। क्योंकि उन्हें रूसी भाषा अनिवार्य भाषा के रूप में सिखाई जाती है। यही कारण है कि रूस थोड़े से समय में ही विश्व की एक महान शक्ति बन चुका है। वहां पर सारा कार्य रूसी भाषा के माध्यम से किया जाता है। किसी विदेशी भाषा का सहारा वहां नहीं लिया जाता।

यदि हम उपरोक्त उदाहरण पर मनन करें तो हम यह पायेंगे कि हिन्दी को माध्यम बनाने से हम राष्ट्र को सुगमता से सुदृढ़ बना सकते हैं।

अतः यदि हम राष्ट्र की एकता को बनाये रखना चाहते हैं तो यह अत्यावश्यक है कि सारे भारतवर्ष में हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार किया जाये। विद्यालयों के पाठ्यक्रम में इसे एक अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाया जाये। उच्चशिक्षा का माध्यम हिन्दी में किया जाये ताकि प्रत्येक भारतीय इसे सीख सके और भारतीय परिवेष में ढल जाये। इससे प्रांतीयता की भावना मिट जायेगी अर्थात् पंजाबी, कश्मीरी, गुजराती इत्यादि की प्रांतीयता की भावना से ऊपर उठकर सभी देशवासी अपने आपको केवल भारतीय समझेंगे जिससे उनमें एकत्व की भावना आयेगी और भारत एक सुदृढ़ राष्ट्र बन जायेगा।

कश्मीर की चित्रकला

मोहन कृष्ण रैना

एक चित्रकार अपने सूक्ष्म भावों से चित्रकला के माध्यम से अभिव्यक्ति देकर संतोष पाता है और स्थाई प्रभाव को जन्म देता है। उसका संसार भिन्न-2 रंगों से रंगा होता है और अपने बुरुस को इन्हीं रंगों में डुबोकर वह अपने चित्रों द्वारा जीवन के भिन्न-2 तथ्यों की ओर संकेत करता है। रंगों का मिश्रण तो एक साधारण सी बात है अपितु रंगों द्वारा अपने विभिन्न अनुभूतियों का परिचय देना एक कठिन कार्य है जिसके लिए एक चित्रकार दिन रात घोर परिश्रम करता है। सफलता पाने पर उसे सर्वस्व प्राप्त करने का आभास मिलता है किन्तु असफलता पर उसे अपनी ही कलाओं में रिक्तता सी नज़र आती है। खैर यह सब कुछ आधुनिक चित्रकला पर लागू होता है।

कश्मीर में चित्रकला की रीति आदिकाल से चली आ रही है और बुर्जहामा की गुफाएं इसकी साक्षी हैं। वहां प्राचीन कला के कुछ नमूने देखने को मिलते हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि प्राचीनकाल में कश्मीर में चित्रकला का माध्यम अपनाया जाता था। प्राचीन कला कुछ सभ्य लोगों की कला को कह सकते हैं और इसकी अपनी सूक्ष्मताएं हैं। यह कला मनोरंजनों की आवश्यकताओं को कम और सामाजिक आवश्यकताओं की अधिक पूर्ति करने के लिए प्रयोग में लाई गई हैं। संसार में जहां भी कहीं कलात्मक तहरीकें पनपीं वहीं सबसे पहले आदिकला ही जनमी हैं। बुर्ज़हामा की गुफ़ाओं में जो भी आदि जातियां बसी होंगी वे इसी प्राचीन कला युग से सम्बद्ध हैं। चित्रकला का जो भी प्रथम प्रयास कश्मीरियों ने किया होगा उसका अनुमान उन टेराकोटा टाइलों से भी लगाया जाता है जो बुर्ज़हामा तथा अन्य स्थानों से प्राप्त हुई हैं। एक ऐसी ही टिकड़ी पर भागते हिरण और उसका पीछा करने वाले शिकारी के चित्र अंकित हैं। चित्रकला का यह नमूना बहुत ही रोचक है।

कश्मीर में नागों का समय 1500 से 500 ई.पू. माना जाता है और इसी अवधि में आर्य भी कश्मीर में दो मार्गों से प्रवेश करते हैं। कुछ ईरान से सीधे यहां आते हैं और कुछ भारत के अन्य भागों में रहने के पश्चात् यहां आते हैं। इस समय की चित्रकला के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं हैं। अनुमान लगाया जा सकता है कि उस समय के कलाकार भी प्राचीन कला युग से सम्बन्ध रखते होंगे।

तत्पश्चात् 300 वर्ष ई.पू. कश्मीर में बौद्ध चित्रकारी आरंभ होती है। बौद्ध इतिहासकार सारनाथ ने बौद्ध चित्रकला तीन प्रकार की मानी हैं।

1- देव, 2- यक्ष, 3, नाग।

बौद्ध लेखक और दार्शनिक नागार्जुन के समय नाग रीति की चित्रकला ने जोर पकड़ा। किन्तु समय की बेकदरी और दुर्भाग्य के कारण इस समय के नमूने जो उस समय की चित्रकला के साक्षी होते हम तक पहुंच नहीं पाए हैं।

"कश्मीर में जब बुद्धमत ने अपनी जड़ें फैलाईं, यहां के तत्कालीन चित्रकारों ने मध्य एशिया के कुछ प्रान्तों तथा चीन तक अपनी कला का प्रचार किया। ये चित्र केवल धार्मिक रीतियों का ही चित्रण करते थे और इस प्रकार के कुछ नमूने मध्य एशिया के प्रान्तों तथा चीनी गुफाओं में से सर औरियल स्टेन तथा लीकॉक ने प्राप्त किए थे।"

धर्म मार्ग 1949
पृष्ठ संख्या 2041-3

"खतन, काशगर, कोची और यारकन्द न केवल बौद्ध शिक्षा एवं जानकारी के केन्द्र ही थे अपितु संस्कृति और सभ्यता के अड्डे भी थे, जहां उच्चकोटि के विद्वान और कलाकार एकत्रित होते थे। खतन का गौमती विहार चीन, भारत तथा मध्य एशिया के बौद्धों के लिए एक तीर्थस्थल बन गया था और वहां कश्मीरी रीति के चित्र जमा किए जाने लगे थे क्योंकि वहां के बौद्ध बौद्ध-धर्म की ज्ञान-प्राप्ति के लिए कश्मीर, जालन्धर और प्रवुरपुर आते और फिर वापस जाते थे।"

भगवान प्रसाद द्वारा लिखित
लेख शीर्षक 'कश्मीरी चित्रकला'
धर्ममार्ग 1949
पृष्ठ संख्या 3

यह बात हैरानी की है कि सर औरियल स्टेन और ली कॉक ने कश्मीरी रीति के जो भिन्न-2 स्थानों से ये चित्र प्राप्त किए थे उनका न कोई अस्तित्व ही है और न उनके बारे में कोई अवशेष ही हैं। किन्तु, भगवान प्रसाद ने अपने लेख 'कश्मीरी चित्रकला' में इस बात की ओर संकेत किया है। न जाने उनका स्रोत क्या हो सकता है लेकिन इसकी पुष्टि में कोई प्रमाण या आधार उद्धृत नहीं किया गया है।

कश्मीर की प्राचीन चित्रकला का प्रमाण उन टेराकोटा टाइलों से भी मिलता है जो हारवन में पाई गई हैं। इनमें से कुछ पर उत्कृष्ट चित्रकला की गई है और कुछ पर भिन्न-2 दृश्य दृष्टिगोचर होते हैं। इनमें से कुछ टेराकोटा टाइलें चौथी शताब्दी की हैं जो श्रीनगर के संग्रहालय में सुरक्षित हैं।

यद्यपि चित्रकला की प्रथा कश्मीर में चिरकाल से अपनाई गई है मगर इस बारे में बहुत ही कम हस्तलिखित संदर्भ प्राप्त हैं जो इस बात की पुष्टि करा सकते थे। कारण यह है कि जो कोई भी सामग्री इस सम्बन्ध में कश्मीर में बची होगी वह अंग्रेजों ने अपने साथ ले ली और इसमें प्राचीन चित्र भी शामिल हैं जो अंग्रेजों ने अधिक मूल्य देकर खरीदे हैं।

नीलमत पुराण में भी वर्णन है कि मन्दिर, धार्मिक तथा साहित्यिक स्थान चित्रों से सजाने चाहिएं। राजतरंगिणी में भी यह बात वर्णित है कि भारत के अन्य प्रान्तों की तरह कश्मीर में भी बड़े-2 सभा प्रकोष्ठ विद्यमान थे जिनकी दीवारों पर चित्रकारी अंकित थी।

आज भी हम देखते हैं कि शादी-ब्याह के अवसर पर कश्मीरी पंडित घराने ग्रह-द्वारों पर क्रूल (कश्मीरी में चित्रकारी) और प्रांगण में रंगोली सजाते हैं। यज्ञ के समय मंडप रंगों से सजाए जाते हैं और आषाढ़ शुक्ल सप्तमी को सूर्याकार सप्तरंगी मंडल बनाया जाता है। इसके अतिरिक्त माघशुक्ल तृतीया के दिन कश्मीरी पंडित घरानों में पुरोहित बच्चों के लिए गौरी के चित्र इत्यादि लाते हैं।

इस बात से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन समय में कश्मीर में चित्रकला अपनाई जाती थी जो धार्मिक और यहां के रीति रिवाजों से सम्बद्ध थी और जिसके माध्यम से यहां की संस्कृति, सभ्यता, धार्मिक संस्कारों तथा सामाजिक रीति-रिवाजों की अभिव्यक्ति होती थी।

बौद्ध लेखक और दार्शनिक नागार्जुन के समय नाग रीति की चित्रकला ने जोर पकड़ा। किन्तु समय की बेकदरी और दुर्भाग्य के कारण इस समय के नमूने जो उस समय की चित्रकला के साक्षी होते हम तक पहुंच नहीं पाए हैं।

"कश्मीर में जब बुद्धमत ने अपनी जड़ें फैलाईं, यहां के तत्कालीन चित्रकारों ने मध्य एशिया के कुछ प्रान्तों तथा चीन तक अपनी कला का प्रचार किया। ये चित्र केवल धार्मिक रीतियों का ही चित्रण करते थे और इस प्रकार के कुछ नमूने मध्य एशिया के प्रान्तों तथा चीनी गुफाओं में से सर औरियल स्टेन तथा लीकॉक ने प्राप्त किए थे।"

धर्म मार्ग 1949
पृष्ठ संख्या 2041-3

"खतन, काशगर, कोची और यारकन्द न केवल बौद्ध शिक्षा एवं जानकारी के केन्द्र ही थे अपितु संस्कृति और सभ्यता के अड्डे भी थे, जहां उच्चकोटि के विद्वान और कलाकार एकत्रित होते थे। खतन का गौमती विहार चीन, भारत तथा मध्य एशिया के बौद्धों के लिए एक तीर्थस्थल बन गया था और वहां कश्मीरी रीति के चित्र जमा किए जाने लगे थे क्योंकि वहां के बौद्ध बौद्ध-धर्म की ज्ञान-प्राप्ति के लिए कश्मीर, जालन्धर और प्रवुरपुर आते और फिर वापस जाते थे।"

भगवान प्रसाद द्वारा लिखित
... 'कश्मीरी चित्रकला'
...र्ममार्ग 1949
...ंख्या 3

यह बात हैरानी ... नो
भिन्न-2 स्थानों से ये ...
अवशेष ही हैं। कि...
संकेत किया है। ...
आधार उद्धृत नहीं ...

कश्मीर क...
में पाई गई हैं। ...
दृष्टिगोचर होते हैं। ...
में सुरक्षित हैं।

यद्यपि चित्रकला ...
ही कम हस्तलिखित संदर्भ ... जो
कोई भी सामग्री इस सम्बन्ध में ... और इसमें
प्राचीन चित्र भी शामिल हैं जो अजन्ता ...

नीलमत पुराण में भी वर्णन है कि मन्दिर, धार्मिक तथा साहित्यिक स्थान चित्रों से सजाने चाहिएं। राजतरंगिणी में भी यह बात वर्णित है कि भारत के अन्य प्रान्तों की तरह कश्मीर में भी बड़े-2 सभा प्रकोष्ठ विद्यमान थे जिनकी दीवारों पर चित्रकारी अंकित थी।

आज भी हम देखते हैं कि शादी-ब्याह के अवसर पर कश्मीरी पंडित घराने ग्रह-द्वारों पर क्रूल (कश्मीरी में चित्रकारी) और प्रांगण में रंगोली सजाते हैं। यज्ञ के समय मंडप रंगों से सजाए जाते हैं और आषाढ़ शुक्ल सप्तमी को सूर्याकार सप्तरंगी मंडल बनाया जाता है। इसके अतिरिक्त माघशुक्ल तृतीया के दिन कश्मीरी पंडित घरानों में पुरोहित बच्चों के लिए गौरी के चित्र इत्यादि लाते हैं।

इस बात से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन समय में कश्मीर में चित्रकला अपनाई जाती थी जो धार्मिक और यहां के रीति रिवाजों से सम्बद्ध थी और जिसके माध्यम से यहां की संस्कृति, सभ्यता, धार्मिक संस्कारों तथा सामाजिक रीति-रिवाजों की अभिव्यक्ति होती थी।

बौद्ध लेखक और दार्शनिक नागार्जुन के समय नाग रीति की चित्रकला ने जोर पकड़ा। किन्तु समय की बेकदरी और दुर्भाग्य के कारण इस समय के नमूने जो उस समय की चित्रकला के साक्षी होते हम तक पहुंच नहीं पाए हैं।

"कश्मीर में जब बुद्धमत ने अपनी जड़ें फैलाईं, यहां के तत्कालीन चित्रकारों ने मध्य एशिया के कुछ प्रान्तों तथा चीन तक अपनी कला का प्रचार किया। ये चित्र केवल धार्मिक रीतियों का ही चित्रण करते थे और इस प्रकार के कुछ नमूने मध्य एशिया के प्रान्तों तथा चीनी गुफाओं में से सर औरियल स्टेन तथा लीकॉक ने प्राप्त किए थे।"

धर्म मार्ग 1949
पृष्ठ संख्या 2041-3

"खतन, काशगर, कोची और यारकन्द न केवल बौद्ध शिक्षा एवं जानकारी के केन्द्र ही थे अपितु संस्कृति और सभ्यता के अड्डे भी थे, जहां उच्चकोटि के विद्वान और कलाकार एकत्रित होते थे। खतन का गौमती विहार चीन, भारत तथा मध्य एशिया के बौद्धों के लिए एक तीर्थस्थल बन गया था और वहां कश्मीरी रीति के चित्र जमा किए जाने लगे थे क्योंकि वहां के बौद्ध बौद्ध-धर्म की ज्ञान-प्राप्ति के लिए कश्मीर, जालन्धर और प्रवुरपुर आते और फिर वापस जाते थे।"

भगवान प्रसाद द्वारा लिखित
[illegible] 'कश्मीरी चित्रकला'
[illegible]मार्ग 1949
[illegible]ंख्या 3

यह बात हैरानी [illegible] नो
भिन्न-2 स्थानों से ये [illegible]
अवशेष ही हैं। कि[illegible]
संकेत किया है। [illegible]
आधार उद्धृत नहीं [illegible]

कश्मीर [illegible]
में पाई गई हैं। [illegible]
दृष्टिगोचर होते हैं। [illegible]
में सुरक्षित हैं।

यद्यपि चित्रकला [illegible]
ही कम हस्तलिखित संदर्भ [illegible]
कोई भी सामग्री इस सम्बन्ध में [illegible] इसमें
प्राचीन चित्र भी शामिल हैं जो अंग्रेज [illegible]

नीलमत पुराण में भी वर्णन है कि मन्दिर, [illegible] साहित्यक स्थान चित्रों से सजाने चाहिएं। राजतरंगिणी में भी यह बात वर्णित है कि भारत के अन्य प्रान्तों की तरह कश्मीर में भी बड़े-2 सभा प्रकोष्ठ विद्यमान थे जिनकी दीवारों पर चित्रकारी अंकित थी।

आज भी हम देखते हैं कि शादी-ब्याह के अवसर पर कश्मीरी पंडित घराने ग्रह-द्वारों पर क्रूल (कश्मीरी में चित्रकारी) और प्रांगण में रंगोली सजाते हैं। यज्ञ के समय मंडप रंगों से सजाए जाते हैं और आषाढ़ शुक्ल सप्तमी को सूर्याकार सप्तरंगी मंडल बनाया जाता है। इसके अतिरिक्त माघशुक्ल तृतीया के दिन कश्मीरी पंडित घरानों में पुरोहित बच्चों के लिए गौरी के चित्र इत्यादि लाते हैं।

इस बात से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन समय में कश्मीर में चित्रकला अपनाई जाती थी जो धार्मिक और यहां के रीति रिवाजों से सम्बद्ध थी और जिसके माध्यम से यहां की संस्कृति, सभ्यता, धार्मिक संस्कारों तथा सामाजिक रीति-रिवाजों की अभिव्यक्ति होती थी।

निःश्वास

I

अशोक 'खामोश'

शोक पत्रों के शब्दों ने
तुम्हें खो दिया है।
तुम्हें खो दिया है
श्रद्धांजलियों के फूलों ने।
अब तुम्हें किसी भी आंख में तैरते अश्रु
नहीं पा सकेंगे!
आंगन में भरा आक्रोश
अन्तर में सिमट कर
उन शब्दों का बोझ
अपने कन्धों से
फेंक देना चाहता है
जिनको समय का सत्य
झुठला चुका है।
नहीं चाहिए वह मूल्य
जिनसे इतिहास की पुस्तक में
मात्र शब्द बन कर सड़ जाएं।
सदियों से पिटती संस्कृति को
क्या देंगे—
सांत्वना के कोरे शब्द,
शाबाशी के कोरे शब्द!
तुम्हें मार डाला
इन्ही शब्दों ने
जिन्हें तुमने स्वयं
पत्थरों पर खोदा
इतिहास के पन्नों के जंगल में
बस एक पाण्डुलिपि बनने की चाह में!
एक लाठी बनकर
अपनी भैंस को
खुद हांकने की क्षमता पा जाते

तो कम से कम
अपने पीछे छोड़ जाते
एक कर्तव्य सा कुछ,
अधिकार सा कुछ,
स्वप्न सा कुछ! निःश्वास-??

II

मैं दब के रह गया हूं
तुम्हारे भव्यता के भ्रम के नीचे
मेरे पिता!
शताब्दियों से लगातार
मर रहा हूं मैं,
प्रतिपल
एक भयानक मौत में
परिवर्तित होता जा रहा हूं!
तुम्हारी मौत के बाद हुई
घुटन लेकर!
मेरे पिता!
मेरी रगों में
कराहने तक का साहस
न भरा तुमने।
मेरे लिए — प्रतिवाद
एक स्वप्न बनकर रह गया है।
किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा मैं
तिरस्कार सहता जाऊं!
कितना? कब तक?
मुझे अब लज्जा आती है।
मेरे पिता।
तुमने मुझे कुछ भी न सिखाया
अपनी प्रतिरक्षा भी नहीं!
तुम्हारे भव्यता के भ्रम से उपजी
केवल
कायरता की हरी हरी दूब;
जिसे तुमने सहन-शक्ति कहा।
हाय!
तुम्हें शब्दार्थ का ज्ञान भी न था।
हाय!
अपनी भव्यता की भ्रम-माया में फंसे

तुमने
किसी से कुछ सीखना भी न स्वीकारा—
न प्रकृति से, न समय से।
फिर मुझे क्या सिखाते?
इसके बिना
कि पुत्र की चाहना
केवल पिता की अन्त्येष्टि
के लिए ही होती है।

मैंने देखा

शिबन तिकू

देखा मैंने
माघ मास के गहन तिमिर में
दाह स्थल पर
ज़ख्मी कोई अपना आप समर्पित करने
धूधू जलती हुई चिता को
बुझ ना जाये चिता कहीं।
इस हेतु अग्नि को झलते खुद ही.......

देखा मैंने
आस-पास को लील गया है
भीषण यह तम-तोम तमी का
तेज हुआ है कुछ धूमिल सा
दाहस्थल का
शेष बची है
सिहरन, सिकुड़न, भीषण ठिठुरन
निठुर शिशिर की
और असीमित धवल तुषार.......

देखा मैंने
नख-शिख को चादर से ढांपे
वह शव-दाहक
कुछ विस्मय से
(कुछ-कुछ भय से)
सोच रहा है
इस कुसमय में मेरे द्वारे
आया कोई
कौन भला वह?
आया क्योंकर
शोर उठा फाटक के पीछे

देखा मैंने
कोई पगली केश बिखेरे
कूट रही थी
वक्षस्थल अपना
कर क्रन्दन मलती थी हाथों को अपने
लगा मुझे
वह मुझसे ही लग बैठी कहने
चिता बुझाओगे ना अपनी?
चित्र अधूरा अब तक अपना
फिर क्योंकर तुम
जला रहे अपने को खुद ही?
मैं पगलाया
मैं बौराया
झुलसा भी मैं
पाकर आंच चिता-पावक की
पग धर भी लेता पीछे को
और चिता की आग बुझाता
किन्तु तभी यह वाणी आई
दूर गगन से
'क्षमता योमि अपराधाय
क्षमता योमि अपराधाय.......'

प्रश्न - ?

संतोष

तुम्हारे चेहरे पर चढ़ती हुई
श्रृंगार की परत पर परत
तुम्हें स्वार्थ की हर सीमा
से पार उतारने हेतु
एक अडिग पुल—
तुम्हें अनुशासन की हर सीमा
से छुड़ाने हेतु
एक मुक्ति-द्वार।
तुम्हारे तन पर कमल की
पंखुड़ियों सा खिलता हुआ
यौवन—
गुलमोहर के फूलों से
लदा हुआ एक वृक्ष—
सम्पूर्ण शाखों में विस्तृत
एक विश्वस्त दृश्य.....
प्रत्येक आगन्तुक के लिए एक गति विरोध।
तुम्हारी कौतुक भरी अटखेलियां
किसी भी चित्र को अपने
कनवास पर उतारने में सक्षम,

तुम्हारी बिना कौतूहल की आंखें
किसी भी अक्स को अपने
कनवास पर उड़ाने मिटाने में अक्षम।
कड़कड़ाती रोशनी में
तुम्हारे धुंधले से
चेहरे पर गहरे चिन्ह
अपनी व्यथा सुनाने के लिए
हरदम आतुर,
तुम्हारी तन की छाया
से अछूता मन
हरदम सुन्दर—
तुम भागती गई
किन्तु तुम्हारी पदचापों से
उभरा प्रश्न गूंजता रहा—
'क्या यह सच नहीं कि
आईना देखना तुम्हारी
नज़र ने सिखाया
और
आईने में उतरना
तुम्हारे तर्क ने?'

लमहों की राख

डॉ. ब्रिज प्रेमी

रात कितनी भयानक है —

मैं आंखें फाड़-फाड़ कर देख रहा हूं। चारों तरफ अन्धेरे के घने जंगल फैले हुये हैं। कुछ भी सुनाई नहीं देता। मैं गुमसुम सन्नाटे की आवाज़ पर कान धरे मन के किवाड़ खोले देखता जा रहा हूं। पसीने में शराबोर दिल की धड़कनें प्रति पल बढ़ती जा रही हैं। लगता है जैसे कोई तूफान जाग रहा है। उस कोने में मेरी बीमार बीवी लेटी हुई है। दो महीने से बीमार है। उसकी पुरानी बीमारी फिर लौट आई है। मैंने हर मुमकिन कोशिश की कि उसे मौत के मनहूस साये से दूर रख दूं, मगर वह खून थूक वही है। वह मेरे बच्चों की मां है। वह मेरे टूटे हुये घरोन्दे की मालकिन है। मैं दिन रात एक करके सुबह से शाम तक पढ़ा-पढ़ा कर कमा लाता हूं ताकि उनकी ज़िन्दगी का सूरज डूब न जाए और उसकी आंखों में हसरतों के आंसू न रह जाएं। लेकिन उसे कौन सा घुन खाये जा रहा है। मेरा ज़हन मशल हो चुका है। मेरी आंखों से टप टप आंसू टपक रहे हैं। पास ही बच्चे सर ओंधाये हुये सो गये हैं। उनके बचपने के सपने जैसे रूठ गए हों। अन्धेरे के उस दहलीज़ परदे के नीचे से उसकी सहमी सहमी आंखों की नाउम्मीदियां और मायूसियां साफ नज़र आ रही हैं। ये सहमी सहमी आंखें फैल जाती हैं और अलमास के बेरंग चेहरे में पैवस्त होती जा रही हैं।

"हट जाओ मेरे सामने से..... मुझसे क्या लेने आई हो? अब तो दस साल बीत चुके हैं। ज़माना कहां से कहां चला आया है। मेरे आंखों के गिर्द हलके पड़ गए हैं और मेरे सुन्दर चेहरे पर हर वक्त थपेड़ों के निशान साफ नज़र आते हैं। मैं उस दिन भी तुमसे प्रभावित नहीं हुआ था जब तुम मेरे मरदाना जलाल पर लट्टू हो गई थीं। तुममें रखा ही क्या था? एक यूंही सी सूरत खाली खूनी जिस्म, न कोई कूस और न कोई ज़ाविया, एक बेढंगी सी मरदाना आवाज़।"

आवाज़ें तो मुझे इस भयानक सन्नाटे में उस वक्त भी सुनती हुई मालूम होती हैं जैसे सन्नाटों ने आवाज़ों को मेरे इर्द गिर्द घेर लिया हो। ये आवाज़ें इस समय मेरे मन के सन्नाटे में भी गूंज रही हैं। और मैंने अलमास की आवाज़ को रोन्द डाला— तुमने अपने तौर मुझसे खूब इंतक़ाम लिया अलमास। तुम राज की बाहों में झूल गईं और मेरी तरफ़ टेढ़ी आंख से भी न देखा। मैं तुम्हारे त्याग और तपस्या को देख देख कर हैरान होता रहा। तुम्हारी बेरंग आंखों में प्यार का इन्द्रधनुष झिलमिलाने लगा। राज के ज्यूमैट्री बॉक्स ने तुम्हारे ज़िस्म के खाली काग़ज़ पर कितने ही अर्धवृत्त और कितनी ही टेढ़ीमेढ़ी रेखायें उभार दीं। सारे गड्ढे भर गए। और तुम्हारा ज़िस्म एक जिंसी बुलावा बन गया और मैं— मैं ज़िस्म की नीली आंखों में कंवल के फूल तलाश करता रहा। जिस जज़्बए शौक़ को लेकर तुम मेरे सायों के पीछे भागती रही थी उसी

गुदाज़ ने मुझे तबस्सुम की मुस्कराहट चूमने के लिए बेक़रार कर दिया। तुम दोनों की दुनिया एक जैसी होते हुए भी कितनी दूर थी। तुम्हें पाताल की तलाश थी और मुझे आकाश की खोज।

आकाश पर स्याही छाई हुई है। तारे अन्धेरे के कब्रिस्तान में दफन हो चुके थे। अन्धेरा ही अन्धेरा, घटाटोप तारीक़ी...., दुनिया मर चुकी है। मेरे कमरे में किताबों के उस ढेर के क़रीब अब एक सिगरेट सुलग रही है। कोई धुंए के मरगोले फ़िज़ा में बिखेर रहा है। धुंवा ही धुंवा..... कड़ुआ कसैला धुंवा ..... काजल के घने साये में डूबी हुई नीली आंखें मुझे फिर बुला रही हैं। लेकिन ज्यूं ही आगे बढ़ता हूं आंखों के दरीचे बन्द हो जाते हैं। खामोशी..... मुकम्मल खामोशी। कोई आवाज़ नहीं..... जैसे चान्द अचानक गहना जाए और मैं कट के रह जाता हूं। वास्तव में मैं चकद हूं। मण्टू का चकद। प्यार के इन्द्रधनुष को थामने के लिए कलाकार हाथों की ज़रूरत है। जो दूर तक फैल सकें। उन सीमाओं को छू सकें जहां लाज का उजाला पहरा देता है। सौन्दर्य के मन्दिर में आरती कौन उतारे?

तबस्सुम........ चान्द...... है...... चान्द की तरफ देख-देख कर आहें भरने का ज़माना बीत चुका है। चान्द टुकड़े-2 होकर आज हर देश की प्रयोगशालाओं में पड़ा हुआ है। घुट-घुट कर गुल जाने की फुरसत कहां? हूं, पुराने लोग सौदाई थे। चान्द से प्रेम करते थे। चान्द और प्रेम? बात नहीं बनती। जिन्दगी उन मंजिलों तक आ गई है जहां सफेद बालों की झाड़ियां साफ नज़र आने लगी हैं। फूल मुरझा गए तो उनकी महक भी मुरझाएगी और बाग़? बाग़ में उल्लू बोलने लगेंगे।

उफ़! सासें रुक सी गई हैं। तारीक़ी के इस अथाह समुद्र में कोई चप्पू मार रहा है। कोई आहिस्ता-2 मेरी तरफ बढ़ता आ रहा है। सांसों में उतार चढ़ाव साफ-2 सुनाई दे रहा है। मेरी आवाज़ गले तक रह जाती है। कोई आसमानी ताक़त?.... मेरा ज़मीर?......

कल सफाकदल में आठ आदमी जल कर राख हो गए। बेचारे! दुखद घटना है। लोग कहते हैं पाप किए थे। चार बच्चों की एक मां और चार बच्चों का एक बाप भविष्य की सारी आशाएं लिए जल गए। एक नई नवेली दुलहन सुहागरात की सेज पर जलकर राख हो गई और चार बच्चे अपनी फरिश्तों की सी मासूमियत और पवित्रता का ताज सिर पर रखे भगवान के दरबार में पहुंच गए और —— और .... मैंने कितने पाप किए हैं। कितने झूठ बोले हैं। कितनी चोरियां की हैं। कितने दिल तोड़े हैं। कितने...... चारों तरफ आग सी जलती हुई महसूस हो रही है। और मैं जलकर राख हो जाता हूं।

कहीं दूर सरगोशियों में कह रहा है वे जो खाने की चीज़ों में मिलावट करते हैं और वे जो काग़ज़ी सड़कें बनाकर सरकारी कोष को लूटते हैं और वे जो नन्हे बच्चों का अपहरण करके उनकी आंखें निकाल कर भीख मांगने का पेशा सिखाते हैं और वे जो अहमदाबाद में धर्म के नाम पर लोगों को जिन्दा जलाते हैं और वे जो.....

मेरी राख में फिर से चिनगारियां सुलगने लगती हैं। मैं पागल हो जाऊंगा। मुझे ज्ञान और आध्यात्मिक विद्या की आवश्यकता है। ज़हन में भग्वद्गीता के श्लोक ताज़ा होते हैं....

नहीं नहीं..... मुझे बुद्ध का त्याग चाहिए..... मुझे ईसा की तितिक्षा की आवश्यकता है। कोई अलौकिक शक्ति मुझे आवाज़ दे रही है..... सन्नाटे की इन असीम वीरानियों को चीरती हुई पुकार... परमात्मा?—— आकाश से रहस्यमय आमंत्रण? आर्मज़स्ट्रांग आसमानों को फांदता हुआ चान्द के ज्योतिर्मय हाले को रौंदता हुआ सकुशल वापस लौटा है..... और सियाह रंग मार्टन लूथर किंग का रक्त अब भी बह रहा है..... और मेरा सिर घूम रहा है। समय बीता जा रहा है। लमहे बीते जा रहे हैं। कमरे के उस कोने में मेरी बीमार बीवी कराह रही है। शायद सीने में फिर दर्द है। उसकी आंखों में आंसू हैं। आंसुओं में हसरतें..... और आज 26 तारीख है। मेरी जेब खाली है और दवाइयों का स्टाक समाप्त हो चुका है। बोतलें पास की ताक़ पर लुढ़क गई हैं। और यार लोग कहते हैं—"तुम्हारी तो चान्दी है। कितने का बैंक बैलेंस हैं। अब तो टकसाल बन चुके हो।" लैंड लेडी ने मेरे बच्चे को फिर सुबह सुबह कोसने दिये हैं—"लाट साहब की औलाद! लोगों का घर उजाड़ के अब मेरा घर मिटाना है। दफा हो जाओ यहां से। जैसे बाबा का घर है।" मैं बच्चे की आंखों में सवेर-सवेरे शबनम के दो क़त्रे देख चुका हूं.... एक अजीब सी उथल पुथल है। उफ! यह रात भी समाप्त नहीं होती। तारीक़ी अपने भयावह जबड़े खोले मेरी ओर बढ़ रही है। सवेरा कब होगा?
——— सवेरा कभी नहीं होगा। देश में अफरातफरी है। स्वदेशीय चरित्र तार तार हो रहा है.... राजनीतिक दल गुत्थमगुत्था हैं। चारों तरफ ब्लैकमेल हो रहा है!

राज ने भी तो अलमास को ब्लैकमेल कर दिया। राज एक जिस्म फरोश मरद है। प्रेम उसका पेशा है और औरत उसकी आर्थिक आवश्यकता। उसने कितनी ही जवान विधवाओं की शारीरिक प्यास बुझा दी। कितनी ही अतृप्त सुहागिनों को सुलगती हुई आग को भड़काया। उसकी सूरत दुकान है। और उसकी मुस्कराहट शारीरिक व्यापार। जिन्दगी की इस मंज़िल पर आकर उसकी कामवासना ठंडी हो चुकी है। लेकिन फिर भी इस्हाक की गोलियां खा खा कर उसने वासना की हांडी को अपने शरीर के साथ भेंच रखा है। अलमास ने अपना धर्म, ईमान, दौलत और शरीर—सबकुछ राज पर निछावर कर दिया। राज अपने शरीर के बदले उसके आभूषणों को छीनकर अपनी ब्याहता बीवी के आभूषण बनाता रहा। अपनी मुस्कराहट के बदले अलमास की एक एक कोड़ी खरीदता रहा। उससे अपनी आसाइश का सामान करता रहा। उसके अंग-2 को मसल कर उसकी कोख में एक बच्चा रख दिया। और बच्चा बेनाम है। बे बाप है। अलमास का कोई नाम नहीं। कोई धर्म नहीं। कोई शरीर नहीं, कोई आत्मा नहीं। उसने मनु से लेकर हीगल और मार्कस तक सारे दर्शनों को चाट लिया है। राज की जात से उसे केवल एक सवाल है। उसके बच्चे की मुस्कराहट का ज़ामिन कौन है?——— राज? जिसने पाप की तपती हुई रेत पर उसके कुंवारे बदन को गले से लगाया। दर्शन———? जहां शुष्क दलाइल के सिवा कुछ भी नहीं। समाज? जो उसे न हिन्दू मानने के लिए तैयार है और न मुसलमान।

"अलमास! चली जाओ——— मेरी नज़रों से हट जाओ और भुगतो अपने पापों का दण्ड।" लेकिन मै हांफ क्यों रहा हूं? मेरी सांसें रुक सी क्यों गई हैं। यह दिल में अजीब सी, बेनाम सी बेक़रारी क्यों चली आई है? तबस्सुम! मेरी जान—— यह तुम हो वही लम्बे केश, वही नीली आंखों की नीली झीलें, वही गालों के सेब, वही सपनों की शाम! ठहर जाओ। मैं तुम्हारे लम्बे बालों को थाम कर आंखों से लगा लूं। सुरमई सायों में ढकी हुई नीली झीलों में झांक

लूं— और कंवल का अधखिला फूल खोज लूं। तुम्हारी प्रतीक्षा में मेरी आंखें पक गई हैं। लेकिन तुम हट क्यों रही हो? तुम्हारी नीली झीलों में ये सफेद-2 धाराएं कहां से आ गईं? कहीं कंवल का वह अधखिला फूल भी..... उफ! मैं पागल हो जाऊंगा।

मैं निढाल हो चुका हूं। चारों तरफ एक तूफ़ान गरज रहा है। जैसे कोई नौका तूफ़ानी लहरों के थपेड़ों में घिरी हुई डोल रही हो। दीवारें हिल रही हैं। मेरे दिमाग़ पर कोई जोर-जोर से हथौड़े बरसा रहा है। ये लमहे अन्धेरे राख होते जा रहे हैं। मेरी बीवी का चेहरा सुस्ता हुआ है। बच्चों के उदास चेहरे मेरे मन की आंख को खोदे जा रहे हैं। तारीक़ जंगलों में हवाएं साँय साँय करती हुई गुज़रती जा रही हैं। बेबसी हाथ फैलाए मेरी तरफ बढ़ती जा रही है और मेरे हाथ दुआ में उठ रहे हैं।

ग़ज़ल

सुभाष प्रेमी 'सुमन'

आओ पृष्ठ पलट डालें हम ज़हरीले इतिहास का।
संशय की धरती में बोयें बीज नया विश्वास का।।

भटके क्यों बन-बन मर्यादा, नेह, न्याय औ सच्चाई।
बहुत बरस पहले बीता युग राघव के बनवास का।।

फूल-पात हो या पौधा हो, मिले सभी को सुख का सांस।
पतझड़ के हाथों गिरवी हो आंचल क्यों मधुमास का।।

काले सूरज ने आकर तो कुछ दिन छल से राज किया।
छिपता भेद भला कब तक इस मुर्झाये उद्भास का।।

सपनों का संसार सुहाना जिन से है बनने की आस।
उन हाथों से मत रचना तुम नगर व्यथा-संत्रास का।।

भूली कविता

मन मोहन लाल गुप्ता

भूली कविता को छोड़ो,
अब क्यों दिमाग़ ख़राब करते हो।
भूली कविता को छोड़ो।।

घटनाएं घटती रहेंगी
भाव आते जाते रहेंगे
उठो, नई कवियाएं जोड़ो
भूली कविता को छोड़ो।।

देखो, नव वसन्त आ रहा,
हवा में मधुर सुरभि बजा रहा।
पतझड़ के पत्ते,
अब दिखाई देते न कहीं।
पुराने भाव भी,
विलीन हो जाते वहीं।।

क्यों अब भी उनको पकड़े हो,
स्वयं को उनसे जकड़े हो
पुराने नाते तोड़ो
जीवन का नया रुख मोड़ो।
उठो, नई कविताएं जोड़ो,
भूली कविता को छोड़ो।।

'ओ अभिशप्त अहिल्या'

नरेन्द्र शर्मा

छूटते इन क्षणों में आज
मन क्यों फिर-फिर चाहता है
आशा का एक और दीप जलाना
किसी शेष प्रयास की तरह।

यूँ भी क्या कम रहा अब तक
विश्वास-पूजक मेरा स्व
तिल-मिल स्वयं को जलाते
अश्रु-बिन्दु अर्पण से,
तुम पाषाण हृदयी को पूजता रहा
किन्तु आज लगता है कि;
शायद ठीक ही कहा है किसी ने
"पत्थर भी कभी पिघलते हैं भला।"

राम से भी ज्यादा
आजीवन भटकन का वनवास
सीता-सी कोई सहचर भी नहीं
लक्ष्मण-सी कोई साँत्वना भी नहीं
ऐसे में तुम मिली तो अवश्य,
अभिशप्त अहिल्या की तरह
किन्तु मैं राम न हो सका
क्यों कि 'मैं', बस 'मैं' ही था।

उपकार की कोई ठोकर नहीं
अपितु रसाभिसिक्त अधर-चुम्बन
प्रेमोष्ण प्रगाढ़ देहालिंगन,
लगा कि तुम जी उठी हो
किन्तु दूसरे ही क्षण
तुम पुनः स्वयं में सिमट गयीं
पूर्वोत्तर मूक, अविचल, स्वकेन्द्रित
वर्जनाओं में तपते पत्थर की तरह।

निकट परिणय उपरान्त
क्या निर्मल प्रेम-निर्झर फूट सकेगा
तुम्हारी सूनी शुष्क आंखें
क्या तब भी यूं ही शुष्क रहेंगी,
स्वनिर्मित इन वर्जना प्राचीरों में
तुम्हारा दम नहीं घुटता कभी
नहीं चाहता मन कभी,
खुलकर सीने में सांस भरने को।

मुझे चाहे विस्मृत ही करो किन्तु,
मुक्त कर दो स्वयं को इस असह्य वेदना से,
पूरित करो दृष्टि की यह शून्यता
सह लूँगा कोई भी स्वरूप इन आँखों में
मूक अधरों को स्मित दे दो,
स्वागत करो नवागत का
तुम सुन रही हो ना
'ओ अभिशप्त अहिल्या'!

"कवि कुलगुरु कालीदास"

राज नाथ कौल

महामूर्ख से महाकविः— महाराज सदानन्द की पुत्री विद्योतमा बड़ी विदुषी और सुन्दरी थी। उसको अपनी विद्या का बहुत गर्व था। उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि शास्त्रार्थ में मुझे जो हरा देगा उसी से मैं अपना विवाह करूंगी। उस राजकुमारी के रूप, यौवन और विद्या की प्रशंसा सुनकर दूर दूर से विद्वान आते थे पर शास्त्रार्थ में उससे पराजित होकर चले जाते थे। जब विद्वानों ने देखा कि यह राजकुमारी किसी प्रकार भी वश में नहीं आती, सबको हरा देती है तब उसकी विद्वता से लज्जित होकर सभी ने राय की कि किसी ढंग से इसका विवाह ऐसे महामूर्ख से किया जाए जिससे यह जीवन भर अपने अहंकार पर पश्चाताप करती रहे। परिणामस्वरूप वे लोग एक मूर्ख की खोज में पड़ गये। एक दिन कहीं रास्ते में जाते हुए देखा भेड़ चराने वाला एक आदमी पेड़ के ऊपर जिस डाल पर बैठा था, उसी को जड़ से काट रहा है। विद्वानों ने उसे देखकर समझा कि बहुत बड़ा मूर्ख है, इसी से विद्योतमा का विवाह हो जाए तो अच्छा है। उन्होंने उस व्यक्ति को बड़े प्रेम से नीचे बुलाया और कहा कि चलो हम लोग तुम्हारा विवाह एक राजकुमारी से करा देंगे। पर देखना राज्य सभा में मुंह से कुछ नहीं बोलना, जो कुछ कहना है वह इशारे से कहना। लो यह धोती चादर जामा और पगड़ी पहन लो, पंडित बनकर हम लोगों के साथ चलो तो तुम्हारा विवाह जरूर करा दिया जायेगा। इस प्रकार पण्डितों की बात पर विश्वास कर वह मूर्ख पण्डित बन कर राज्य सभा में पहुँच गया। पहले से ही उपस्थित विद्वानों ने उसका सत्कार किया और उसे सबसे ऊँचे स्थान पर बैठा दिया। बाद में विद्योतमा से कहा कि यह वृहस्पति के समान काशी के दिग्गज विद्वान हैं। आपके साथ शास्त्रार्थ करने के लिए आए हुए हैं किन्तु इस समय यह तपस्या करने के कारण मौन वृत लिए हुए हैं। शास्त्रार्थ में आपको जो कुछ कहना हो संकेत से कहिये। यह सुनकर राजकुमारी ने अपने मन से यह सोचकर कि ईश्वर एक है एक उंगली उठायी। इधर मूर्ख ने समझा कि यह ऊंगली दिखाकर मेरी एक आँख फोड़ने का संकेत कर रही है। इसीलिए उसकी दोनों आखों को फोड़ने के अभिप्राय से अपनी दोनों उंगलियों को उठाया। इस पर विद्योतमा के विरोधी उपस्थित विद्वानों ने इसका यह अर्थ लगाया कि यह संकेत कर रहे हैं कि आत्मा एक नहीं है, किन्तु दो हैं, एक जीवात्मा तथा दूसरा परमात्मा। विद्वानों के इस कुचक्र के परिणामस्वरूप उस राजकुमारी को उससे हार मानकर पूर्व में हुई प्रतिज्ञा के अनुसार अपना विवाह उस महामूर्ख ब्राह्मणकुमार से कर लेना पड़ा।

रात के समय एकान्त में जब दोनों का मिलन हुआ तब किसी तरफ एक ऊँट चिल्ला उठा! राजकुमारी ने पूछा कि कौन चिल्ला रहा है? इस पर उस मूर्ख ने उत्तर दिया कि "उष्ट्र चिल्लाता है।" राजकुमारी ने चौंककर फिर पूछा कि कैसा शोर है तब उष्ट्र के बदले में 'उट्ट बोलता है' ऐसा कहने लगा। क्योंकि वह जन्म से ही मूर्ख था। 'उष्ट्र' का शुद्ध उच्चारण कैसे कर

सकता था। बाद में पण्डितों की धूर्तता का पता चला विद्योतमा इस पर पश्चाताप करती हुई फूट-फूट कर रोने लगी। बाद में अत्यन्त दुखी होकर उस मूर्ख को घर से बाहर निकाल दिया और बोली कि यदि तुम विद्वान हो कर आओगे तो मेरे साथ तुम्हारा सम्बन्ध हो सकता है अन्यथा नहीं! इस प्रकार भर्त्सना दिखाकर विद्योपार्जन के लिए अनुप्रेरित किया। इधर वह मूर्ख भी इस व्यवहार से बड़ा लज्जित हुआ। पहले तो सोचा कि अपने प्राण दे दूँ फिर सोच समझ कर विद्योपार्जन में परिश्रम करने लगा। भगवती काली की उसने बड़ी उपासना की, फलस्वरूप देवी की कृपा से थोड़े दिनों में वह एक ऐसा प्रभावशाली विलक्षण विद्वान हो गया कि जिसका नाम संस्कृत साहित्य में तथा विश्व के इतिहास मे अजर-अमर हो गया। सच है सच्ची लगन से क्या नहीं हो सकता है। ये ही हैं हमारे चरित नायक कविवर कालिदास जी उपासना द्वारा भगवती काली की कृपा से अब प्रतिभासम्पन्न महाकवि कालिदास के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

जब वे कवि होकर अपने घर राजकन्या के पास लौटे तब घर का दरवाजा बन्द था। उसे खोलने के अभिप्राय से उन्होंने संस्कृत में कहा कि ''अनावृत कपाट द्वारं देहि''। तब विदुषी पत्नी ने प्रश्न किया कि ''अस्ति कश्चिद वाग्विशेषः?'' (आपकी वाणी में कुछ विशेषता आई?) कालिदास की वाणी देवी के प्रसाद से निर्मल हो चुकी थी। इसलिए कवि ने अपनी पत्नी विद्योतमा के प्रश्नभूत वाक्य के अन्दर वर्तमान 'अस्ति-कश्चित और वाग' इन तीन शब्दों से आरम्भ करके तीन काव्य बना डाले।

'अस्ति शब्द से आरम्भ करके — 'अस्त्युतरस्याँ दिशि देवतात्मा''

(कुमारसम्भव महाकाव्य)

कश्चित शब्द से आरम्भ करके — ''कश्चित्कान्ता विरहगुरुणा''

(मेघदूत खण्ड काव्य)

वाग शब्द से आरम्भ करके — ''वागर्थीवव संप्रक्तौ''

(रघुविष महाकाव्य)

कालीदास संस्कृत साहित्य के अद्वितीय महाकवि हैं। इनकी कविता की मधुरिमा के सामने अन्य कवियों की कविता फीकी पड़ जाती है। आपने जैसा मानव हृदय के सूक्ष्म भावों का निरीक्षण किया है वैसा अन्य कवियों ने नहीं। कालिदास अन्तर तथा बाह्य दोनों जगत के सूक्ष्म निरीक्षक महाकवि हैं।

खेद की बात है कि इस महाकवि की जन्म तिथि तथा जन्मस्थान के बारे में भी हमारे विद्वानों में मतभेद है क्योंकि आज के कवियों की तरह इन्होंने अपना परिचय लेख मात्र भी नहीं दिया है। कई इसको उज्जयिनी वासी मानते हैं तो कई इसको काशी का निवासी मानते हैं। इसी प्रकार इसके समय के सम्बन्ध में भी केवल अनुमान ही लगाये गये हैं। कई इसको छटी शताब्दी के कवि मानते हैं तो कई ई. पूर्व. प्रथम शताब्दी में मानते हैं। कई लोगों का मत है कि कालिदास गुप्त नरेशों के स्वर्ण युग में हुए थे। एक किंवदन्ती है कि कालिदास उज्जयिनी के राजा महाराजा विक्रमादित्य की सभा के नव रत्नों में एक महारत्न थे।

रचनायें : कालिदास ने आठ ग्रन्थों की रचना की है — दो महाकाव्य — एक 'कुमारसम्भव', दूसरा 'रघुवंश', एक खण्डकाव्य — 'मेघदूत', दो स्फुट काव्य — 'ऋतुसंहार और शृंगार तिलक' और तीन नाटक — (1) 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' (2) 'मालविकाग्निमित्र', (3) 'विक्रमोर्वशीय'।

कालीदास की प्रसिद्धि का कारण — 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्'। समालोचकों ने चरित्र-चित्रण, रस परिपाक, भाषा सौष्ठव, संविधान के चातुर्थ की दृष्टि से 'अभिज्ञानशाकुन्तलम् को संस्कृत नाटकों में सर्वश्रेष्ठ माना है। कलकत्ता हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस सर विलियम जोंस ने एक संस्कृत के पण्डित की सहायता से 1783 में ' अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक का अंग्रेजी में अनुवाद किया। जिसने यूरोप के विद्वानों की मनोदृष्टि भारतीय नाट्य प्रतिभा की प्रणीति से चकित एवं मुग्ध कर दिया। उसके अनन्तर कई यूरोपीय भाषाओं में उसके अनुवाद भी हुये। इस समय तो विश्व की कोई ऐसी भाषा नहीं है, जिसमें 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक का अनुवाद न हुआ हो।

काव्य-सौष्ठव :— कविकुल गुरु की कोमल कमनीय कलेवर कविता विश्व के किस समुदाय को आनन्द मग्न नहीं कर देती है। इनकी कविता के प्रसादगुण को अधिकता, मधुर्य का मधुर सन्निवेश, कोमल कान्त पदावली, उपमा को अपूर्वता, अलंकारों को रमणीयता, छन्दों की छटा और भाव सौष्ठव आदि पर्याप्त मात्रा में रहने के कारण उनकी कविता विश्व विख्यात बन गई है। इनके काव्यों की जिस दृष्टि से देखा जाए उसी से काव्य कला की कमनीयता प्रकट होती है। इनकी कविता में सरस सरल सुबोध तथा सुन्दर-सुन्दर शब्दों एवं भावों का सामराज्य मन मुग्ध कर देता है। लीजिए एक उदाहरण देखिए —

शकुन्तला का रूपवर्णन करते हुए राजा दुष्यन्त कहता है —

अनाघ्रातं पुष्प किसलयमलूनं कररुहै
रनाविद्धं रत्नं मधुनवमनास्वादित रसम्।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च त द्रूपमनघं
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।

अर्थात विधाता शकुन्तला का यह निर्दोष रूप लावण्य किस भाग्यशाली के उपयोग में लायेंगे, क्योंकि इसका मनोहर सौंदर्य बे सूघॉ हुआ पुष्प, नाखूनों से न नोचे गये कोमल पल्लव, बिना बेंघा हुआ रत्न तथा जिसका रस नहीं चखा गया है उस अभिनव मधु के समान तथा पुण्यों के अखण्डित फल के समान है। अर्थात यह किस्म भाग्यशाली पुरुष की अर्द्धांगिनी बनेगी। मैं यही बार-बार विचार कर रहा हूं!"

अपने महान महाकाव्यों तथा मनमोहक नाटकों के कालिदास का नाम पूरे विश्व में पहले स्थान पर आता है! प्राचीनकाल में जब श्रेष्ठ कवियों की गणना हुई तो कनिष्ठका पर कालिदास का नाम आ गया। उसके बाद की उगँलियाँ अनामिका आदि पर किसी अन्य कवि का नाम न अया अतः अनामिका सार्थवती रह गई। कालिदास के अतिरिक्त कोई ऐसा कवि न हुआ जिस को अनामिका का स्थान प्राप्त हो —

पूरा कवीणाम् गणना प्रसंगे कनिष्ठिताधिष्ठित कालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्य कवेंरभावद् अनामिका सार्थवते बभृव।।

वाल्मीकि और व्यास के बाद विद्वतसमाज में सर्वप्रथम महाकवि के नाम से कालिदास इनकी नैसर्गिक रचना में भाषानुकूल भाव रखने की अद्भुत कला है! मल्लिनाथ ने तो स्पष्ट कहा है कि कालिदास की वाणी का वास्तविक रहस्य हमारे जैसे लोग तो नहीं समझ पाते केवल तीन व्यक्ति ही समझ पाते हैं, एक तो विधाता— ब्रह्मा, दूसरी वाग्देवी सरस्वती तथा तीसरे स्वयं कालिदास!

कालिदास गिराँ सार कालिदास सरस्वती।
चतुर्मुखोऽथवा ब्रह्मा विदुर्नान्येतु माद्यशः।

अन्त में श्री कृष्ण मणि त्रिपाठी के शब्दों में — "संस्कृत साहित्य के उपवन में कालिदास का आगमन एक वसंत दूत के रूप में माना गया है! जिसके कारण उपवन का कोना-कोना पुष्पित हो उठा है! इन्होंने नई साज सज्जाएँ, नई दिशाएँ, नये विचार अभिनव भाव, नई-नई पद्धितियाँ प्रस्तुत की हैं। ये संस्कृत में सबसे बड़े कवि और सर्वश्रेष्ठ नाटककार हुए है।"

ग़ज़ल

अमीन मख़दूमी

चान्द तुम पर करूं मैं निसार अयि सनम!
यह बता दे हकीकत या ख़्वाब हो तुम।।
मेरी ये बेक़रार निगाहें हैं जो,
इनका हरपल सनम दस्तयाब हो तुम।।
कोई रखता तुझे दिल के आईने में,
प्यार से कोई रखता है तुझे बांहों में,
इससे आगे कहूं और क्या हमनशीन,
जैसे शायर की कोई किताब हो तुम।।
आज जी भर पिला दे हमें साकिया,
मस्त नज़रों से हमको पिला साकिया,
ताकि मदमस्त रहेंगे हम तासफ़र,
दिलरुबा! दिलजलों की शराब हो तुम।।
तूने छीना 'अमीन' का चैन व सकून,
बिन तेरे होता महसूस दिल का जनून,
दिल में मेरी बसी तेरी हर जुस्तजू
हम नवां! मेरे दर्दे ज़िगर की अज़ाब हो तुम।।

चेतावनी

मोती लाल 'चातक'

युग भृकुटी का वक्र-सा संकेत,
तुमसे कहता है कि —
तुम्हें शान्ति का सरल-सा,
सरस-सा, जग बसाना ही पड़ेगा,
विश्व-शान्ति का,
मधुर-सा, मृदुल-सा
कल्पना-निलय सजाना ही पड़ेगा,
युद्ध की विभाषिका, ·
तुमपर लटकती है,
अवलम्बहीन-सी, अवसरहीन-सी,
देती चेतावनी तुम्हें कि—
यदि तुम अब भी नहीं सम्भले
बदले, तो रह जायेगा,
तुम्हारा-नाम शेष,
तुम्हारे ही उन कर-कमलों
के द्वारा,
जिनकी भाषा ''रूपक'' और
''उपमा'' अलंकारों से अलंकृत है,
''हिरोशिमा, और ''नागासाकी'',
की बंजर-धरती,
अपाहिज-मानव,
स्तनहीन मातायें,
तुम्हे कहती हैं अश्रुपूर्ण नयनों से,
कि यदि तुम अब भी न जागे,
तो निद्रा-पिशाचनी,
तुम्हें,
सदा के लिए अपनी क्रोड़ में—
सुलायेगी,
वर्तनान औ''भावी,
सन्तति के काले,
मानव,
कुछ उत्तर दो,
न जाने तुम क्यों मौन हो?
सुन्न हो,
कमरे के जिह्वा हीन कलैंडर
के समान।

नृत्य— एक परम्परा

शफी मुहम्मद मीर

जीवन एक अनुभूति है और नृत्य उन ही अनुभूतियां को अंगो और शारीरिक मुद्राओं से अभिव्यक्त करना। प्राचीन काल से हमारे भारत में नृत्य की एक परंपरा रही है और समय के गुज़रने के साथ-साथ नृत्य की इस परंपरा में देश, काल और परिस्थिति अनुकूल प्रत्येक प्रान्त में परिवर्तन होता रहा है जिससे प्रत्येक प्रान्त में नृत्य की अलग-अलग विशेषता रही है।

अरुणाचल प्रदेश का बारदोछम नृत्यः—

बरादोछम का अर्थ है जन्म कुण्डलियों का नृत्य। रंग-बिरंगे राक्षसों के मुखौटे और वेषभूषा पहने नर्तक दर्शाते हैं कि जीवों की गतिविधियों पर ईश्वर निगरानी रखता है और अच्छे को इनाम तथा बुरे को दण्ड देता है। अरुणाचल प्रदेश के कामेंग ज़िले के शरदुकोन आदिवासी उत्सवों के अवसर पर यह नृत्य करते हैं।

मिज़ो जाति के लोगों का बांस-नृत्यः—

मिज़ो लोग बांस के जंगलों में रहते हैं जिसके फलस्वरूप बांस उनके दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बना है। बांस-नृत्य मिज़ो लोगों का लोक नृत्य है जिसको दोनों पुरुष तथा महिलाएं करते हैं। चार लम्बे बांसों को एक दूसरे पर खड़ा करके उन पर नृत्य किया जाता है और ढोल तथा नगाड़ों को बजाया जाता है।

नागा-नृत्य :—

परंपरा से लड़ाकू तथा शिकारी होने के कारण नगाओं का नृत्य युद्धमय लगता है तथा युद्ध और शिकार के भाव की अभिव्यक्ति करता है। नृत्य में उन की वेष-भूषा अत्यन्त विचित्र तथा रोचक है। सिर पर लम्बे रंगीन पर, शरीर पर युद्ध जैसा रंगों का लेपन, गले में पत्थरों तथा सींघों के हार, हाथी दान्त के झांझर और हाथों में लम्बे नेज़े उन की मुख्य वेषभूषा है।

किलांग हैम :— नागलैंड की कौन्याक जन-जाति का यह बड़ा रोमांचक भावपूर्ण परंपरागत लोक नृत्य हैं। युद्ध में विजय पाने के बाद इस नृत्य को किया जाता है और रंग-बिरंगी वेषभूषा में नर्तक ढोल, घड़ियाल, और बाँसुरी बजाते हैं।

मनी पुरी :— पूर्वी भारत के इस राज्य का दूसरा नाम यदि नृत्य से जोड़ा जाए तो युक्ति-संगत होगा। वृद्ध-युवाजन तथा छोटे बच्चे एक साथ नृत्य करते हैं। उनका नृत्य कृष्णलीला तथा राधा और कृष्ण के परंपरागत प्रेम से जुड़ा है।

इन नृत्यों में छः प्रकार के विभिन्न रसों की अभिव्यक्ति होती है।

1. महारस, 2 वसन्त रस, 3 कुंज रस, 4 नित्य रस, 5 गोप रस, 6 उलूखल रस

पहले चार रस कृष्ण की राधा और गोपियों के साथ प्रणय क्रीड़ा की अभिव्यक्ति करते हैं तथा अंतिम दो भगवान कृष्ण की वीरता की अभिव्यक्ति करते हैं।

महारस: यह नृत्य कार्तिक पूर्णिमा को किया जाता है। कृष्ण की बांसुरी से वशीभूत होकर गोपियां अपने घरों और काम को छोड़कर कृष्ण के साथ मस्ती में नाचती हैं। कृष्ण जल्दी ही राधा के साथ अन्तर्धान हो जाते हैं। किन्तु राधा के गर्वित होने पर कृष्ण राधा से भी अन्तर्धान हो जाते हैं तथा सभी मिलकर कृष्ण से प्रकट होने लिए प्रार्थना करती हैं। उनका वियोग प्रार्थना से क्षणभंगुर होता है और कृष्ण फिर से उनके सामने प्रकट हो जाते हैं।

वसन्त रस : यह नृत्य चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को होता है। भगवान कृष्ण राधा और उसकी सखियों के साथ वसन्त ऋतु में रंगों का त्योहार मनाने के लिए एकत्रित होते हैं। इस नृत्य में कृष्ण चन्द्रबाली की ओर अधिक ध्यान देते हैं जिससे राधा क्रोधित होती है। अन्त में कृष्ण राधा से क्षमा याचना करते हैं और गोपियां कृष्ण के अनुरोध पर अनचाहे मन से अपने घरों को लौटती हैं।

कुंज रस: यह नृत्य आश्विन की अष्टमी के दिन दशहरा पर किया जाता है इस नृत्य में कृष्ण का सखियों की सहायता से राधा के साथ एक कुंज में संभोग का चित्रण होता है। अन्त में कृष्ण और राधा अपनी मनपसन्द सखियों के साथ अभिसार और रास रचा कर कुंज में चले जाते हैं।

नित्य रस : यह नृत्य किसी शुभ अवसर पर रचा जाता है। इस नृत्य में दिव्य प्रेमियों के लिए शय्या के संवारने की अभिव्यक्ति होती है जो पुरुष तथा प्रकृति के संभोग का प्रतीक है।

उपर्युक्त नृत्य पूर्णिमा को श्री गोविन्द जी के मन्दिर में राधा और कृष्ण की मूर्तियों के सामने रचाये जाते हैं।

गोप रस : यह नृत्य कार्तिक मास में रचाया जाता है। इस नृत्य में भगवान कृष्ण की वीरता का चित्रण होता है।

उलूखल रस : यह नृत्य भी कार्तिक मास में रचाया जाता है। इस नृत्य में भगवान कृष्ण द्वारा अपने बाल्यकाल में गोपाल बालकों के साथ मक्खन और दही चुराने तथा गोपियों को सताने का चित्रण किया जाता है। गोपियों की शिकायत मिलने पर यशोदा कृष्ण को उलूखल के साथ बान्धती है किन्तु कृष्ण अपने को मुक्त करने में सफल हो जाते हैं और भागते हैं।

"बदनसीब"

—बाल कृष्ण मेघ

सागर आर्मी की दो वर्ष नौकरी करने के बाद पहली बार छुट्टी लेकर घर आया था। सुबह जब वह अपने घर के बाहर निकला तो उसका सामना अंजली से हो गया। अंजली को देख कर सागर का सीना धक् से रह गया। क्या यह वही अंजली है? नहीं — उसके दिल ने ही उत्तर दिया। उसे तो सुर्ख जोडा पहने, मांग भरी हुई होनी चाहिये थी, लेकिन यह तो सफेद साड़ी, सूनी मांग अंजली धीरे-धीरे चलती हुई उसके करीब आई कुछ क्षण रुकी और फिर कुछ कहे बिना धीरे से आगे बढ़ गई। सागर अंजली को इस रूप में देख कर बेताब सा हो गया यह जानने के लिए कि अखिर अंजली के साथ ऐसा क्यों कर हो गया। अपनी इस बेताबी को दूर करने के लिये वह सीधा अपनी मां के पास गया और पूछा, "माँ, अंजली को — !" इसके आगे वह एक शब्द भी न बोल सका, उसकी माँ ने ही उत्तर दिया "बेटा,— अच्छा ही हुआ अंजली की शादी तुमसे नहीं हुई। शादी तो अंजली की हुई लेकिन दूसरे ही दिन उसके पति की मृत्यु हो गई।"

माँ की बात ने सागर को सारी रात सोने न दिया। नींद ऐसी थी जैसे उसे कोसो दूर भाग गई हो। बस वह सारी रात सोचता रहा कि आखिर क्यों किस्मत ने अंजली के साथ ऐसा भयानक खेल खेला। यदि अंजली की शादी मुझसे नहीं हुई थी, तो कम से कम जिससे अब शादी हुई थी, वह जीवित रहता। अंजली की शादी हुई और उसके बाद वह विधवा भी हो गई। क्यों नहीं मिला अंजली को गृहस्थ का सुख? यदि अंजली मंगलीक है तो इसमे उसका क्या दोष है— यही सोंचते-2 सागर की आंखों के सामने बीते दिनों की तस्वीरें घूमने लगीं— जब अंजली और उसमें बहुत प्रेम था, दिन में जब तक वह दोनों एक दूसरे को नहीं देख लेते थे, उनको ऐसा लगता था जैसे उन्होंने खाना न खाया हो। सागर ने तो अपने घर वालों को अपनी इच्छा प्रकट कर दी थी कि वह अंजली से ही शादी करेगा। दोनों के घर वाले सहमत भी हो गये थे। उधर सागर और अंजली की खुशी का तो कोई चारावार ही नहीं था। उन दोनों को मनचाहा साथी मिल रहा था। उन्हें क्या मालूम था कि ऊपर वाले ने उनकी किस्मत में कुछ और ही लिखा है। रीति-रिवाज के अनुसार दोनों के घर वालों ने पण्डितजी को बुला कर कुण्डिलिया मिलवाई— पण्डित जी ने धीरे से यह कह दिया था कि लड़की 'मंगलीक' है जिसके कारण दोनों वर-वधू नहीं बन सकते। यदि फिर भी आप लोग दोनों की शादी कर देंगे तो इन में से एक की मृत्यु हो जायेगी। सागर ने अंजली से शादी करने से इन्कार इसलिये नहीं किया था कि वह मंगलीक है बल्कि अंजली ने सागर की माँ को यह कह दिया था कि वह किसी और लड़के से प्रेम करती है, सागर से तो वह प्रेम का नाटक ही करती रही है। चूंकि अंजली को असलियत मालूम हो चुकी थी। उसने यहां तक सोच लिया था कि वह किसी से भी शादी नहीं करेगी। यही

बात सागर को बहुत बुरी लगी कि वह तो अंजली को अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करता था लेकिन उसका अंजली ने यह प्रमाण दिया कि वह मुझसे प्यार का नाटक करती रही है। उन्हीं दिनों आर्मी की भरती चल रही थी और सागर ने आर्मी ज्वाइन कर ली थी। अंजली ने तो अपने घर वालों को बहुत कहा था कि वह किसी से भी शादी नहीं करेगी आखिर उसके घर वालों ने बहुत मजबूर कर दिया जिसके कारण उसको शादी करनी पड़ी— आज वही अंजली सफेद साड़ी में लिपटी हुई है।

सागर बड़ी बेतावी से दिन का इन्तजार कर रहा था, दिन होते ही वह अपने घर के बाहर फिर खड़ा हो गया इस आशा से कि यदि आज अंजली आयेगी तो उससे वह बात करेगा। और हुआ भी वही, आज फिर जब अंजली उसके दरवाजे के आगे से गुजरने लगी तो सागर ने उसको पुकारा ''अंजली — ।'' अंजली के पांव वहीं रुक गये, उसने अपना चेहरा उठा कर सागर की ओर कुछ क्षण देखा। सागर ने देखा कितना दर्द झलक रहा था अंजली के चेहरे पर। आखिर सागर ने ही बात की— अंजली यह सब क्या हो गया, मुझे तो यह सब दो दिन पहले ही मालूम हुआ, कल भी तुम मेरे सामने से निकल गई और आज भी यदि मैं आवाज न लगाता तो तुम आज भी मुझे न बुलाती, हो सके तो दोपहर में घर जरूर आना। अंजली सागर की बात का उत्तर दिये बिना ही आगे बढ़ गई। दोपहर को सागर ने घर पर उसका बहुत इन्तजार किया लेकिन वह न आई। दूसरे दिन भी अंजली उसे कहीं दिखाई न दी। सागर बहुत परेशान हो गया, कहीं अंजली को मेरी बात तो बुरी नहीं लगी? मुझे नहीं करनी चाहिए थी उससे ऐसी बात? तीसरे दिन सागर दोपहर को घर पर बैठा कुछ पढ़ रहा था। उसने देखा कि अंजली उसी प्रकार सफेद साड़ी पहने हुये आई, मां को नमस्ते कर उसके पास ही कुर्सी पर बैठ गई, जमीन की ओर देखते हुये बोली ''आप कुछ कहना चाहते थे।'' ''हां अजंली, मुझे सचाई मालूम हो गई है कि तुमने मेरी जान बचाने के लिये ही उस वक्त मेरे से शादी नहीं की थी।'' ''कोई और बात नहीं कर सकते आप।'' अंजली नहीं चाहती थी कि इस विषय पर कोई बात हो। सागर हैरान था यह सुनकर कि आज अंजली ने उसको 'आप' शब्द से सम्बोधित किया था। ''अंजली, तुम्हें मालूम है कि मैं ज्यादा बात को लटकाता नहीं हूँ। जो कहता हूँ उसे थोड़े शब्दों में कह देता हूं, क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हम शादी कर लें।'' सागर ने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि अंजली उठी और तेज-2 डगभरती हुई उसके घर से बाहर चली गई। सागर भी उसके पीछे-2 उसके घर पहुँच गया। जाते ही उसकी मां से कहने लगा ''माँ जी मैं अंजली से शादी करना चाहता हूँ। आपको कोई एतराज तो नहीं है, क्योंकि अब मुझे सच्चाई मालूम हो गई है, मैं इन झूठे रीति-रिवाजों को नहीं मानता।''

और इसके बाद जब बहुत कहने सुनने पर भी सागर नहीं माना तो फिर एक बार अंजली को लाल साड़ी पहना कर दुल्हन बनाया गया। फिर एक बार अंजली के घर की मुंडेर पर शहनाई गूँजी, बारात आई और अंजली की डोली उठी। जब डोली सागर के घर पहुंची तो सागर की मां ने अपने घर के दरवाजे पर खड़े हो कर अपने बेटे और बहू की आरती उतारी। दरवाजे में भीगी हुई हल्दी के टब में अंजली के पाँव रखे गये जिनके निशान सागर के शयन कक्ष तक एक के बाद एक बनकर गये थे।

ज्यों-2 शाम सूरज को अपनी आगोश में समाने की कोशिश कर रही थी, अंजली का मन भय से काँप रहा था। आखिर रात आई। सागर ने जब कमरे में प्रवेश किया, उस समय वह बहुत खुश थी। सागर को देख अंजली ने अपने भय का पीछा करना छोड़ सागर का साथ दिया और जबरदस्ती अपने होठों पर मुस्कान लाई। सागर बिस्तर के करीब पड़ी हुई कुर्सी पर बैठ गया। ''अंजली देखो मैंने तुम्हें किस्मत से छीन लिया है, अब तुम मेरी हो, वाह! क्या कहता था वह पण्डित इन दोनों की शादी नहीं हो सकती— हा-हा-हा'' और सागर जोर-2 से हंसने लगा, हंसता ही गया उसकी हंसी अपनी चरम सीमा पर पहुंच कर रुक गई, सागर अपना दिल थामते हुये चिल्लाया अंजली-लो-मेरा दिल----'' इसके आगे सागर एक भी शब्द न कह सका और धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा। अंजली यह देख रोने लगी और भागी-2 मां के पास गई, उधर मां भी रोने लगी— सारे घर में चीत्कार सा मच गया। दूसरे दिन से अंजली को फिर से वही सफेद साड़ी पहना दी गई माँग फिर सूनी कर दी गई। आज भी अंजली उसी प्रकार सूनी मांग और सफेद साड़ी में लिपटी उसी गाँव की गलियों में घूम रही है, अब कोई सागर उसकी माँग नहीं भरता। अब कोई भी आगे बढ़कर अंजली से यह नहीं कहता— ''अंजली मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ''। शायद अब अंजली के जीवन में कभी सावन नहीं आयेगा।

अक्षर का सत्य

—*मोहन कृष्ण कौल*

"अतीत के संग्रहालय के शब्दकोष में
सोये पड़े अक्षर बेमानी हैं
उन्हें सोने दो, जगाओ मत....."
तुमने कितनी बार कहा
पर मैं नहीं मानता तुम्हारी धारणा।
अक्षरों की अपनी पृष्ठभूमि है,
इतिसाह है, साहित्य है—
अपनी परिभाषा है।
अक्षर फूलों की सुगन्ध की तरह
सुवासित हैं,
बासी ही सही
सुगन्ध फिर भी सुगन्ध है।
अक्षर निर्दोष है
उन्हें लताड़ो मत,
दीवार से सिर टकराना मूर्खता है,
दीवार की आंखें नहीं
लेकिन दीवार के भी कान होते हैं।
अक्षरों को सहला दो
नहलादो अन्तःकरणों के
निर्मल जल में—
अक्षर बोलेंगे,
अपना मौन खोलेंगे।
अक्षरों की भाषा निराली है,
उनसे आशा जोड़ो
नाता तोड़ना अन्याय है,
नहीं तो अक्षर प्यासे ही रहेंगे।

मेरे गीत

मोहन कृष्ण कौल

गीत मैंने जो चुने कब से संजोये थे,
मन के उपवन में बड़े प्यार से जो बोये थे,
बीज अंकुर में उगे आज लगे साकार मुझे,
शबनमी फूल के मोती जो नयन खोये थे।

शरद की शाम की बेला जो इधर से आई,
दर्द के जाम की रेला जो उभर के आई,
ज़िन्दगी जाग पड़ी आज बड़ी देर के बाद—
जब से भूलों की भुलैयों में पड़े सोये थे।
गीत मैंने जो चुने कब से संजोये थे.....।

रुपहले चांद के रेशम से दरीचों से
ये छनकती हुई किरणें जो बग़ीचों से
छा गई एक सुगन्ध, सुनहरे चिनारों से,
प्रेम सागर के जो सपनों में समोये थे।
गीत मैंने जो चुने कब से संजोये थे.....।

नाव काग़ज़ सी लिए आज लगी यह दुहाई
कुछ अजब सी मची मझधार में जब यह रुलाई
"कोई पतवार जो थामे तो मगर साहस का..."
जब से चितवन से खेवैया भी लगे रोये थे....
गीत मैंने जो चुने कब से संजोये थे.....।

बीत जाये न स्नेह और प्रणय की यह घड़ी,
पूजने योग्य बनाई थी मुहब्बत की लड़ी,
डोर इसकी न कोई भूल से भी छू पाये,
जिसमें रंगीन महकते हुये फूल पिरोये थे।
गीत मैंने जो चुने कब से संजोये थे।।

भौतिक कम्प्यूटर

संतोष लंगर

मैंने जन्म लिया
मनु बन कर,
फिर कवि बना
संसारी भी,
त्यागी भी बना
ब्रह्मचारी भी,
युग बदले,
मौसम बदले,
नदियां बदलीं,
सावन बदले,
मैं चलता रहा—
सुकरात बना
ले जन्म नया।
ले जन्म नया
मैं क्या न बना?
युग बदला,
मौसम बदला,
सावन बदला,
मैं चलता रहा,
विद्वान बना
साहित्य के संग।
फिर धीरे से युग बदल गया,
पुष्पक विमान
नीचे उतरा,
तीरों से बरखा होने
लगी,
ध्वनि से बादल
गरज गये,
फिर एक नज़र
से जन्म हुआ.....

हां परखनलियों में,
वैज्ञानिक चमत्कारों में।
मेरे मन में उपजी एक शंका
क्या सचमुच
ऐसा होता था?
क्या मानव इतना पावन था?
क्या धरती इतनी सुन्दर थी?
अब भी मानव
लेता है जन्म
पर क्या कुछ स्वैच्छिक कर पाए
कम्प्यूटर का युग
आया है,
मानव को कहां
जरूरत है?
"सोओ तो सोओ
जागो तो जागो,
मैं काम करूंगा
मुझे कुछ नहीं
चाहिये, तुम्हारी तरह
निद्रा नहीं आती,
आलस्य नहीं आता,
भूख नहीं लगती
किसी चीज़ की चाह नहीं,....."
सृष्टि चलती ही जायेगी
कह दो मनु से
वह क्यों लाये
अपने पुत्रों,
पड़पौत्रों को?
वह जाये यहां से
कुछ फर्क़ नहीं,
विज्ञान चमत्कारित
होगा—
मनु फिर होगा
पर रूप न होगा
रूप नया वह ले लेगा
बेजान, बेअसर
भौतिक कम्प्यूटर।।

ऋतुराज की ओर

बसन्ती भान

आना अब की बार अपने यौवन में
हे ऋतुराज !
छाना कण कण में,
नहीं इठलाना अपने भाग्य पर
रस, रूप, माधुर्य, आकर्षण,
भीनी सुगन्ध, लावण्य—
ये हैं लक्षण तेरे—
इनके चाहने वाले बहुतेरे हैं
आयेंगे तेरे आने पर
स्वागतम् द्वार पर
मंगल-मोद मनाएंगे
हर्षोल्लास में,
मधुमास में।
हे श्रीमन्त! जब आओगे
कोई नया गुल खिलाना
अब की बार
मेरे लिए
जिसकी पहचान अलग हो,
रूप अलग हो,
स्पर्ष मात्र से ही जिसकी
परख हो
खिलाना अब की बार
कोई नया गुल।
नहीं चाहती बसन्त में
कुकुम केसर के फूल।
यह सर्वथा होगी भूल।
नहीं चाहती मैं मधुमास में
कुसुमों की धूल—
जो जनेगी शूल।
आना अब की बार खिला के
कोई अलौकिक फूल
जिसका रंग अलग हो,
रूप अलग हो
हे ऋतुराज!

मधुर यादें

अशोक कुमार चिर्वी

कुछ दिन पहले सपनों के कुछ फूल खिले थे मुस्कानों के।
कलियां खिल पाई थीं अलिकुल भ्रमराए थे अरमानों के।।
सुरभित उपवन सब को महकाता था छल से।
नूतन किसलय कोकिल कुंजित 'कूहू' कल से।।
मद से अलसित अखियां मदिरा छलकाती थीं।
अंतरतम की मस्ती लट को हलकाती थीं।।
मनसिज शर के डर से छतियां धड़कीं धड़कीं।
लगती थीं बहियां कुछ सहमी फड़कीं फड़कीं।।
यह सब नेह स्नेह का दीपक जब सुलगा था।
पुलकित मन का बोझिल दीपक जब उजला था।।
अंकुर प्रेम-प्रणय की फैली जब पंखुड़ियां।
एक सहारा अवलम्बन पाई जब कड़ियां।।
मंज़िल एक बने राही दो अनजाने पर।
हर्षित मंगल-मोद की वर्षा-ऋतु आने पर।।
जब से आंख मिली तो पाया न्यारा न्यारा।
श्यामल कोमल हरित रंगों सा प्यारा प्यारा।।
ऐसे में एक दिन यूं पाया चलते चलते।
अस्तांचल में चन्द्रबदन ज्यूं ढलते ढलते।।
इक नन्हा बच्चा अति सुन्दर साथ लिए थी।
कोमल कर से उसका कोमल हाथ लिए थी।।
अपने वीर्य वदन को लक्षित मैं कुम्हलाया।
'बच्चा मेरा ही' मैंने मन को समझाया।।
चलते दो पहिए की मैंने ब्रेक लगाई।
देख मुझे, अपने बच्चे संग शरमाई।।
अन्तर मन से बच्चे को वह दिखलाती थी।
मेरा प्रेम-प्रणय सब उसको सिखलाती थी।।
लेकिन बच्चा अपनी मस्ती में भटका था।
और मैं विस्मित अपने वाहन पर अटका था।
इस असमंजस में कुछ नहिं निर्णय कर पाया।
और अपने रस्ते पर वाहन को मैं लाया।।
अब भी जब जब सुगन्ध सुमन सी छा जाती है।
याद सुरीली और मधुर कुछ आ जाती है।।

अतीत की परछाइयां

बाल कृष्ण 'सन्यासी'

अतीत की परछाइयां
आतुर हो रही हैं
अन्दर आने के लिए।
रोक लो इन्हें,
किवाड़ बन्द कर लो।
जो अतीत अन्दर आ पाएगा
तो छटपटी किरणों की तरह
सारे भवन में छायेगा
और सन्नाटे से घिरा
अकेला मैं
रक्तहीन, उदासीन, दशाहीन मौन में
कौतूहल लाऊंगा।
बाहर की महक, भीतर की बासी हवा
जो आपस में मिश्रित हुए
तो अर्धरात्री छिपे शिवालय को
सुनहला चमकाएगी।
कलियुग की आंख खुलते ही
हृदय की गति रुक जाएगी
और असामयिक प्रलय
पीठासीन होगा।
रहस्यमय भविष्य हत्या के आरोप में
हथकड़ियां पहनाएगा मुझे,
बिजली अकस्मात बन्द हो जाएगी,
नहीं सुन पाएंगे टी.वी. और रेडियो से
प्रसारित हो रहे समाचार।

चन्दा

—राजेन्द्र कुमार त्रँगू

पक्षी चहचहाने लगे जिससे वातावरण गूँज उठा। सूर्य महाशय ने पूर्वांचल से झांकना आरम्भ किया। भारत के स्वर्ग 'कश्मीर' में चाँदी के समान दिखने वाली बर्फ से ढकी हुई ऊँची-ऊँची चोटियों पर जब रवि की किरणें पड़ीं तो उन्होंने प्राकृतिक सुन्दरता में चार चाँद लगाए।

दिन चढ़ते-चढ़ते सभी प्राणी अपनी दिनचर्या में जुट गये। श्रीनगर से ५ किलोमीटर दूर रैणावारी में श्री मोतीलाल रैणा के घर में प्रातः से ही कुछ हलचल हो रही है। आज वह दूसरे दिनों की अपेक्षा ज्यादा ही प्रसन्न दिखाई दे रहे हैं क्योंकि आज उनकी बड़ी लड़की की सगाई हो रही है। प्रातःकाल यथासमय जागने के पश्चात् पूजादि से निवृत्त होकर आज वे खाने-पीने की व्यवस्था हेतु बाज़ार चले गए और वहां से वापस आकर अब अपनी पत्नी कमला को निर्देश दे रहे हैं।

"भई, देखो कमला, अपनी लाड़ली बेटी चन्दा की सगाई हो रही है। समधी व अन्य अतिथि जो आ रहे हैं, उनको बड़े कमरे में ही बिठाना और हां, खाना आज वैसा ही स्वादिष्ट बनाना जैसा उस दिन बनाया था जब मेरी तुम से सगाई हुई थी। वास्तव में तो मैंने उसी पर रीझ कर तुम से विवाह..... ...."

"आपको बातें बनाना खूब आता है।" आपकी बातों से ऐसा लगता है कि चन्दा केवल आपकी लड़की है और जैसे मेरा उससे कोई सम्बन्ध ही नहीं।" 'लो भई! तुम तो नाराज़ हो गई। मैं तो यूंही कह रहा था कि ज़रा सावधानी बर्तना। कोई कसर न रहने पाये।"

"अच्छा! छोड़िये इन बातों को। वे कब आ रहे हैं?" "यही कोई १० बजे तक आ ही जायेंगे। चन्दा कहाँ है?" "मेरे विचार से ऊपर अपने कमरे में होगी।" "अच्छा! कमला, मैं पंडित जी को बुलाने जाता हूँ। साढ़े नौ बजे तक लौट आऊँगा।" यह कहते हुये मोतीलाल कमरे से बाहर निकले।

"ज़रा जल्दी आइयेगा!" कहकर कमला देवी चन्दा को पुकारने लगी। "चन्दा, ज़रा नीचे आना।" आई माँ!" माँ की पुकार सुनकर चन्दा ने ऊपर से ही उत्तर दिया। वह ऊपर कमरे की सफाई कर रही थी।

चन्दा ऊपर कमरे की सफाई करके अब राजन की यादों में खो गई थी। उसने राजन को अपने मन-मन्दिर का देवता बना लिया था और वह अब उस क्षण की प्रतीक्षा कर रही थी जब राजन उसका होकर रहेगा।

"चन्दा! चन्दा बेटी, ज़रा नीचे तो आना", कमला देवी दुबारा पुकारने लगी।

माँ की पुकार सुनकर चन्दा की यादों की तन्द्रा टूटी और वह तुरन्त नीचे माँ के पास आ पहुँची।

"क्या है, माँ?"

"अरी बेटी, वे लोग अभी आ ही रहे होंगे। चल, जरा काम में मेरा हाथ तो बंटा।" और चन्दा काम में अपनी माँ की सहायता करने लगी। उसके मानस-पटल पर राजन की छवि अभी भी अंकित थी।

साढ़े दस बजे अतिथि आ गये। राजन, उसके पिताजी— श्री प्रेमनाथ राज़दान, श्रीमती शीला राज़दान, उसकी बहन सीमा व अन्य निकट के सम्बन्धी। कुल मिलाकर १० व्यक्ति थे। पहले कुछ जलपान इत्यादि व दिन में भोजन किया गया। चन्दा का हृदय धड़क रहा था और वह लज्जा रही थी। सभी प्रसन्न दिखाई दे रहे थे। नन्हीं ज्योति और कविता अपने होने वाले जीजाजी को कोई कहानी सुनाने लगे। अन्त में सगाई सम्पन्न हुई। राजन व उसके सम्बन्धी एव माता-पिता जी सब लोगों से विदाई लेकर वापस हब्बा-कदल लौट आये।

** 'यदि सभी मनुष्यों के विचार अच्छे होते तो कितना अच्छा होता, किन्तु अक्सर ऐसा होता नहीं है। लोगों के प्रत्येक काम पर समाज के ठेकेदार पैनी दृष्टि रखते हैं। जब वह काम उनके हित का हो तो वे उसका समर्थन करते हैं और जब उनके विरुद्ध हो तो उनसे पचता नहीं। वे उस काम को बिगाड़ने हेतु तत्पर रहते हैं।'

ऐसी ही एक स्त्री, माया जो राजन के घर निकट ही हब्बा कदल में रहती थी, ने सुना कि राजन के घरवाले उसकी शादी में दहेज नहीं ले रहे हैं। यह सुनकर वह राजन के घर आयी और उसकी माँ शीला देवी से कहने लगी, कि वह अपने बेटे के विवाह में दहेज क्यों नहीं ले रही है। इस पर शीला देवी ने कहा—

"माया बहन, ईश्वर का दिया हुआ हमारे पास सब कुछ है। फिर हमें दहेज लेकर क्या करना है।"

"अरी! शीला बहन तुम तो बहुत ही भोली हो। दहेज प्रथा तो अनादिकाल से चली आ रही है। क्या तुम्हारी होने वाली बहू के माता, पिता इतने दरिद्र हैं कि वे अपनी बेटी को कुछ भी न दे सकेंगे?"

"किन्तु। वह तो................"

"पढ़ी-लिखी है, यही तो तुम कहना चाहती हो ना। लेकिन लीलावती की बहू भी तो पढ़ी लिखी है। फिर भी वह 20 हजार रुपये दहेज में लाये। मैं पूछती हूं आखिर तुम्हारे बेटे राजन में ऐसी कौन-सी कमी है जो वह बिना दहेज ही विवाह करें।"

शीला देवी कुछ चिन्तित-सी दिखाई देने लगी। माया ने और उकसाकर कहा, "मैं कहती हूँ अब भी समय है— तुम राजन की सगाई पहली जगह से तोड़ दो। फिर देखना, मैं उसके लिये तुमको बढ़िया से बढ़िया घर दे दूँगी जो दहेज में 25 हजार रुपये देने को तैयार हैं।"

"25 हजार रुपये।"......

माया ने लोहा गर्म देखकर अन्तिम प्रहार किया, "शीला बहन, मुझे जो उचित सूझा वह मैंने कह दिया। शेष तुम जानो।" और इतना कहकर माया शीला देवी से विदाई लेकर अपने घर चली गयी।

माया ने शीला देवी को माया का लोभ देकर उसको कर्तव्य से दूर हटा दिया।

सायंकाल को जब श्री प्रेमनाथ राज़दान घर लौट आये तो शीला देवी ने माया का प्रस्ताव उनके सामने रखा। पहले तो वह अपनी पत्नी से सहमत नहीं हुये किन्तु फिर लोभ में पड़कर उनकी बातों का समर्थन करने लगे। देर तक विचार-विमर्श के उपरान्त यह निश्चित हुआ कि कल प्रातः ही रैणावारी श्री मोती लाल रैणा के पास यह सन्देश भेजेंगे कि दहेज न मिलने के कारण वे मंगनी तोड़ रहे हैं तथा वे फिर से मिलने का आगे से कष्ट न करें।

काश, इस समय राजन यहाँ होता तो ऐसा अनर्थ नहीं हो जाता। किन्तु भाग्य की विडम्बना ही कहिये— कुछ दिन पूर्व वह किसी आवश्यक कार्य हेतु जम्मू चला गया था। 'होनी तो होके ही रही, उसे कौन टाल सकता था।'

श्री मोतीलाल रैणा के घर में मंगनी टूट जाने का सन्देश सुनकर कोलाहल मचा। मोती लाल अपने मन में सोच रहे थे, कि वह गरीब क्यों रहें? अगर वह गरीब न होते तो आज उनकी लड़की की मंगनी इस प्रकार न टूटती। अगर उनके पास पैसा होता तो आज वह प्रेमनाथ जैसे दहेज-लोभी पुरुष के मुँह पर पैसा फेंककर उससे अपनी प्यारी बेटी की खुशी फिर से माँगते।

कमला देवी की दशा भी ऐसी ही थी। ज्योति व कविता अपने माता-पिता को ढाढस दे रहे थे और उनसे चन्दा दीदी की मंगनी टूटने का कारण पूछ रहे थे। उन दोनों के मुँह पर ताले पड़े थे। वे अपनी नन्हीं बेटियों को क्या बताते कि वे कहीं के न रहे। अब उनकी बेटी को कोई पूछेगा भी नहीं। 'यही इस समाज की रीति है, जब कोई धनवान गरीब की इज्जत से खिलवाड़ करता है तो धनवान की कोई हानि नहीं होती, अपितु, गरीब ही इस चक्की में पिस जाता है। यही कृपा होती है धनवानों की गरीबों पर— गरीब लुटता आ रहा है, पिटता आ रहा है किन्तु तनिक विरोध भी नहीं कर सकता। इसी प्रकार लड़के वाले जब उनका जी चाहे मंगनी तोड़ देते हैं और असहाय लड़की वाले हक्के-बक्के से देखते ही रह जाते हैं। लड़के का पिता अपने लड़के की इस समाज रूपी बाज़ार में बोली लगा देता है और जो उसको ऊंचे दाम दे सके, उसी से सम्बन्ध जोड़ता है।'

मोतीलाल व उनकी पत्नी को आश्चर्य हो रहा था कि राजन जैसा आधुनिक लड़का भी अपने माता, पिता का साथ दे रहा है। वह तो प्रारम्भ से ही इस कुप्रथा का घोर विरोधी रहा था किन्तु अब उसका सिद्धान्त कहाँ गया? यह सब सोच-सोचकर उनको राजन पर भी क्रोध आ रहा था। परन्तु उनको क्या पता कि बेचारा राजन भी इस अनर्थ से बिल्कुल अनभिज्ञ है।

चन्दा की दशा अति दयनीय थी। वह अपने कमरे में बैठी हुई राजन का चित्र अपने हाथों में लिये हुये और उसी की ओर देखती हुई रो रही थी। वह राजन के चित्र से मन ही मन

अनेक प्रश्न पूछ रही थी। वह पागलों के समान रोते हुये उसी चित्र से कह रही थी— "आप तो ऐसे न थे, फिर आपने यह सब कुछ कैसे होने दिया। आखिर ऐसा क्यों हुआ? क्यों"......

फिर अचानक वह उठ खड़ी हुई और कमरे में पागलों के समान चक्कर काटने लगी। एकाएक उसके मन ने उससे कहा, "ऐ! चन्दा, अब तू क्या कर रही है? जिसको तूने अपने मन-मन्दिर में देवता का स्थान दिया। वही आज तुम्हें छोड़ गया। क्या तुम अब वह स्थान किसी दूसरे पुरुष को दे सकती हो?"

"नहीं"..... चन्दा ज़ोर से चीखी।

"तो फिर तुम्हें जीवित रहने से क्या लाभ मिलेगा। तुम जाकर वितस्ता में डूब क्यों नहीं जाती। तुम्हारा जीना अब व्यर्थ है... व्यर्थ है... व्यर्थ है।"

"हाँ! तुम ठीक कहती हो। जब राजन ही मुझे भूल बैठा तो मेरा जीवित रहना किस काम का? इस निर्दयी समाज ने मुझे कहीं का न रख छोड़ा। मेरा तो इतना ही कसूर है ना कि मैं गरीब परिवार में जन्मी हूँ और मेरे पिता जी दहेज नहीं दे सकते। क्या इस समाज में यह सदा होता रहेगा? क्या यह कुप्रथा कभी समाप्त न होगी?" ऐसे प्रश्न उसके मन में उभरे और अन्त में उसने यही निश्चित किया कि वह मर जायेगी किन्तु और किसी दूसरे पुरुष का नाम भी नहीं लेगी। राजन ही उसका देवता है, सब कुछ है। राजन ने उसका साथ न दिया तो क्या हुआ। वह अपने प्रेम को पवित्र रखने हेतु अपनी बलि देगी। अन्त में उसने आत्महत्या करने का निर्णय कर लिया। अब वह सायंकाल की प्रतीक्षा करने लगी।

सायंकाल को चन्दा घर से निकलकर 'जोगी लण्कर' बस स्टॉप पर आकर बस में चढ़ी। उसको अपना अतीत याद आ रहा था कि अचानक कंडक्टर ने आकर उससे पैंसे मांगे।

चन्दा ने एक रुपया निकालकर उसको थमा दिया।

"किधर जाना है, बहन जी?" कंडक्टर ने पैंसे लेते हुए पूछा।

"लाल चौक।" चन्दा ने शुष्क स्वर में उत्तर दिया।

कंडक्टर ने चन्दा को शेष ५० पैंसे लौटा दिये और आगे बढ़ा। बस लाल चौक पर आकर रुकी। चन्दा बस से उतर कर सीधी सड़क जो श्रीनगर दूरदर्शन केन्द्र को जाती है, उसी पर हो ली। उसको अपने आप की सुध ही न थी। अन्दर से वह रो रही थी। रह-रहकर उसे राजन, अपने माता-पिता व अपनी छोटी बहनों की याद आ रही थी। श्रीनगर दूरदर्शन केन्द्र के निकट 'जीरो कदल' पर पहुँचकर वह रुकी और पुल के किनारे-किनारे धीरे-धीरे चलकर पानी की ओर देखने लगी।

उसी समय राजन के पिता श्री प्रेमनाथ राज़दान अपनी कार में राजबाग से आ रहे थे कि उनकी दृष्टि पुल के किनारे धीरे-धीरे चलती हुई चन्दा पर पड़ी। वह आश्चर्य में पड़ गये कि चन्दा अकेली यहाँ क्या कर रही है? अभी कुछ सोच भी न पाये थे कि चन्दा ने उछलकर नदी में छलांग लगाई। यह सब इतनी शीघ्र हो गया कि वह कुछ समझ न सके। कार तुरन्त रोककर उन्होंने भी नदी में छलांग लगा दी। नदी में जीवन और मृत्यु के बीच संघर्ष करती हुई चन्दा को

उन्होंने पीठ पर लादकर किनारे पर लाये। किनारे पर लाकर प्रेमनाथ ने चन्दा की नाड़ी देखी। नाड़ी अभी तक चल रही थी। यह जानकर उसकी चिन्ता कम हुई और उसने ईश्वर का मन ही मन धन्यवाद किया। प्रेमनाथ ने समय गंवाना अच्छा नहीं समझा; अतः चन्दा को उठाकर अपनी कार में डाल दिया। स्वयं आगे बैठकर कार को ड्राइव किया और कुछ समय पश्चात् वह हब्बाकदल अपने घर पहुँच गया। कार रोककर तुरन्त चन्दा को हाथों में उठाकर घर के भीतर ले गये व पलंग पर उसे लिटा दिया। शीला राज़दान ने जब चन्दा को इस हालत में देखा तो चिन्तित हो उठी। वह अपने पति से कुछ पूछने लगी तो प्रेमनाथ कह उठे, "जरा ठहरो, अभी डॉ. साहब को फोन करने दो व रैणावारी मोतीलाल भाईसाहब को यहाँ आने की सूचना भी देनी है।"

यह सब काम करने के पश्चात् प्रेमनाथ कमरे में आकर कुर्सी पर बैठकर बोलने लगे, "चिन्ता करने की कोई बात नहीं है। सब कुछ ठीक हो जायेगा।"

"किन्तु यह सब हुआ कैसे?" शीला ने चिन्तित भाव से पूछा। और प्रेमनाथ ने शीला को आदि से अन्त तक सब सुनाया।

शीला विस्मित हुई और उसने अपने पति से कहा, "अगर आप संयोगवश वहाँ से न आते तो आज अनर्थ हो जाता।"

तभी मोतीलाल, उनकी पत्नी व डॉ. साहब आ गये। मोतीलाल और कमला देवी पागलों के समान चन्दा से लिपट गये और फूट-फूट कर रोने लगे। डॉ. साहब ने उनको तसल्ली देकर चन्दा से छुड़ा लिया और चन्दा की जांच करने लगा।

"ईश्वर की कृपा है कि यह लड़की बच गयी। यदि थोड़ी देर और पानी में रहती तो इसका जीवित रहना कठिन हो जाता। मैं इसको इंजेक्शन लगाये देता हूं। थोड़ी-देर में होश में आ जायेगी। शेष चिन्ता करने की कोई बात नहीं।" इतना कहकर डॉ. साहब ने चन्दा को इंजेक्शन लगा दिया और सब लोगों से विदाई लेकर चले गये।

संयोगवश तभी राजन जम्मू से आ गये और पूरी बात जानकर उनको बहुत दुःख हुआ। उनको माता-पिता पर बहुत ही क्रोध आया जिन्होंने उसकी अनुपस्थिति में इतना अनर्थ किया। राजन ने अपने माता-पिता से कहा, "आप को दहेज चाहिये या लड़की। क्या आपके पास धन का अभाव है जो आपने चन्दा जैसी बहू को ठुकरा दिया।"

इसी मध्य चन्दा को होश आने लगा। मोतीलाल व कमला देवी उस के निकट ही पलंग पर बैठ गये।

राजन ने अपनी माँ की ओर देखकर कहा, "मां, क्या तुम यह भूल गयी कि हमारी सीमा का विवाह भी तो होगा। अगर आज तुमने चन्दा को केवल दहेज न लाने हेतु अस्वीकार किया तो कल सीमा को भी कोई ठुकरा देगा। माँ! क्या कमी है चन्दा में? बोलो? क्या वह पढ़ी-लिखी नहीं है? क्या वह अच्छे परिवार की लड़की नहीं है? बोलो माँ, बोलो?"

इतना सब कुछ सुनकर जब प्रेमनाथ व शीला देवी से न रहा गया तो उन्होंने राजन को 'माया' की सारी बातें बताईं जिसे सुनकर राजन क्रोधित हो उठा और कहने लगा, "जब तक इस

समाज में माया जैसी स्त्रियाँ रहेंगी तब तक बहुत सी कुप्रथायें समाज में चलती रहेंगी। हमार पहला काम ऐसा होना चाहिये कि माया जैसी स्त्रियां बने ही नहीं; अतः ऐसी स्त्रियों की बातों पर विश्वास ही नहीं करना चाहिये।''

फिर उसने माता-पिता जी से कहा कि अगर ऐसा अनर्थ हो जाता तो चन्दा के माता-पिता जी व उनकी बहनों का क्या हो जाता।

राजन के माता-पिता जी पश्चात्ताप करने लगे और माया को कोसने लगे कि उसने उन दोनों के विचारों को कैसे अपनी चिकनी-चोपड़ी बातों से परिवर्तित किया था। वे दोनों अब अपने बेटे, चन्दा, मोतीलाल व कमला देवी के सामने अपनी भूल पर लज्जा अनुभव कर रहे थे। वे दोनों चन्दा के निकट गये और प्रेमनाथ ने उससे कहा, ''बेटी! मुझे क्षमा कर देना। अब मुझे समझ आ गया कि मैं कैसी भूल व अन्याय कर रहा था। थोड़ा-सा धन पाने के लिए हम सब आज तुम्हें खो रहे थे।''

चन्दा से रहा न गया। उसने कहा, ''पिताजी! आप मुझसे क्षमा मत मांगें। मैं तो आपकी बहू बनने जा रही हूँ और बहू पुत्री के समान ही होती है। आप क्षमा माँगकर मुझे शर्मिन्दा न कीजिये।''

''तुम कितनी महान हो चन्दा बेटी'', प्रेमनाथ व शीला देवी ने एक साथ कहा। शीला ने चन्दा को गले से लगा लिया और चन्दा ने शीला देवी की ममता भरी बाहों में अपना सिर छुपा लिया।

प्रेमनाथ मोतीलाल के समीप आये और उनसे कहा, ''भाईसाहब! मैं आपसे भी क्षमा चाहता हूँ। मेरे कारण आपको बहुत कष्ट उठाने पड़े। मुझे समझ नहीं आता है कि मेरी बुद्धि को उस समय क्या हो गया था, जब मैं आपसे यह अन्याय कर बैठा।''

''भाईसाहब! मुझे अधिक लज्जित न करें। आखिरकार हम लड़की वाले हैं,'' मोतीलाल ने कहा।

कमला देवी ने अपने पति का समर्थन किया।

शीला देवी भी कमला देवी से क्षमा मांग रही थी। जब चन्दा ठीक हुई तो वे वापस रैणावारी आ गये। ज्योति व कविता अपनी चन्दा दीदी से लिपट गये। चन्दा सोच रही थी कि यह सब कैसे हो गया। उसकी प्रसन्नता का कोई ठिकाना न रहा जब उसने फिर से अपने परिवार के लोगों को हंसते हुये देखा।

'ईश्वर की लीला-न्यारी है। कब क्या होगा, किसी को मालूम नहीं।' चन्दा जो गरीब परिवार में जन्मो और जिसकी एक बार दहेज न लाने पर मंगनी टूटी एवं जो अपने आपको अभागी समझती थी, आज उसका विवाह बड़ी धूम-धाम से राजन के साथ हो रहा था।

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए प्रोत्साहन

सरकार की नीति है कि राजभाषा के कार्यान्वयन की प्रगति, प्रोत्साहन एवं सद्भावना द्वारा की जाए। इसके अनुरूप राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा अन्य उपायों के साथ-साथ कई प्रोत्साहन योजनाएं चालू की गईं जो इस प्रकार हैं:—

2.1 राजभाषा शील्ड, ट्राफी तथा पदक प्रदान करने की योजना इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड और इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार

केंद्रीय हिन्दी समिति की सिफारिशों के अनुसरण में, विभिन्न मंत्रालयों/विभागों, बैंकों और वित्तीय संस्थाओं, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और व्यक्तियों को, सरकार की राजभाषा नीति को बढ़ावा देने के कार्य में उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए पुरस्कार प्रदान करने हेतु एक योजना लागू की गई है। इस पुरस्कार का नाम "इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार" है। यह वित्त वर्ष 1986-87 से लागू है और इसके निम्नलिखित चार मुख्य भाग हैं:—

(क) भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड।

(ख) बैंकों तथा अन्य वित्तीय संस्थाओं के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड।

(ग) भारत सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड।

(घ) व्यक्तियों द्वारा हिन्दी में लिखी हुई मौलिक पुस्तकों के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार। विभिन्न पुरस्कारों के ब्यौरे और इसके संबंध में अपनाई जानी वाली मूल्यांकन विधि नीचे दी जा रही है:—

(क) भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड

प्रत्येक वर्ष तीन शील्डें योग्यताक्रम से भारत सरकार के उन मंत्रालयों/विभागों को प्रदान की जाएंगी जो केंद्रीय सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में सर्वोत्कृष्ट घोषित किए जाएंगे। मंत्रालयों और विभागों के कार्य निष्पादन का मूल्यांकन पहले परिचालित किए गए मानदंडों के अनुसार किया जाएगा।

(ख) बैंकों और केंद्रीय सरकार की वित्तीय संस्थाओं के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड

तीन शील्डें उन वित्तीय संस्थाओं व बैंकों के लिए दिए जाने का प्रावधान है, जिन्होंने अपने संगठनों में राजभाषा नीति को बढ़ावा देने के लिए उत्कृष्ट कार्य किया है तीन सर्वोत्कृष्ट संस्थाओं का निर्धारण करने में राजभाषा विभाग को भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा सहयोग प्रदान किया जाएगा, जो सामान्यतः वित्तीय संस्थाओं के कार्य का पर्यवेक्षण करता है।

(ग) भारत सरकार के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड

"क", "ख" और "ग" क्षेत्रों में से प्रत्येक क्षेत्र के लिए तीन-तीन पुरस्कार आरंभ करने का प्रावधान है। इन नौ संगठनों का निर्धारण करने में राजभाषा विभाग को उद्योग मंत्रालय के लोक उद्यम विभाग से सहयोग प्राप्त होगा।

(घ) हिन्दी में मौलिक पुस्तकें लिखने के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

कर्मचारियों का जिन विषयों से सरकारी तौर पर संबंध हो उन पर हिन्दी में मौलिक पुस्तकें लिखने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु ऐसी पुस्तकों के लिए तीन पुरस्कार प्रारंभ करने का प्रावधान है जो सर्वोत्कृष्ट घोषित हों और जिनसे विभिन्न सरकारी विभागों में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने में सहायता मिलती हो। पुरस्कारों की राशि निम्न प्रकार से है:—

प्रथम पुरस्कार	—	10,000 रु०
द्वितीय पुरस्कार	—	8,000 रु०
तृतीय पुरस्कार	—	5,000 रु०

किसी विशेष वर्ष में पुरस्कार दिए जाने के संदर्भ में विचार करने के लिए प्रस्तुत की जाने वाली पुस्तकें उससे पिछले वित्त वर्ष में लिखी हुई अथवा प्रकाशित हुई होनी चाहिए और कर्मचारी जिस मंत्रालय/विभाग से संबंधित हो उस मंत्रालय/विभाग द्वारा इनकी विधिवत सिफारिश की जानी चाहिए। भारत सरकार के मंत्रालयों/विभागों की संख्या को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक मंत्रालय/विभाग की अधिक से अधिक दो ही पुस्तकों पर विचार किया जाएगा। विचार करने के लिए प्राप्त हुई पुस्तकों का मूल्यांकन राजभाषा विभाग में गठित एक समिति द्वारा किया जाएगा। समिति की सिफारिशें गृह मंत्री का अनुमोदन प्राप्त करने के लिए राजभाषा विभाग को प्रस्तुत की जाएंगी।

भारत सरकार के मंत्रालय और विभाग अपने कार्य से संबंधित विषयों पर हिन्दी में मौलिक पुस्तकें लिखने के लिए दिये जाने वाले उन पुरस्कारों को भी चालू रखेंगे जो इस विभाग

के तारीख 28 मई 1979 के कार्यालय ज्ञापन संख्या 11/20034/679-रा. (क-2) के परिपालन में आरंभ किए गए थे, तथापि वे पुरस्कार प्राप्त करने वाली अपनी पुस्तकों के बारे में, हिन्दी में मौलिक पुस्तकें लिखने के संबंध में ऊपर पैरा "घ" में उल्लिखित इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार के लिए सिफारिश कर सकते हैं।

2.2 सरकारी कामकाज में मूल हिन्दी टिप्पणी/आलेखन के लिए प्रोत्साहन

इस संबंध में दिसम्बर 1984 से संशोधित प्रोत्साहन योजना लागू की गई हैं जो इस प्रकार है:—

(1) केंद्रीयं सरकार के सभी मंत्रालय/विभाग/संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालय अपने अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए स्वतंत्र रूप से इस योजना को लागू कर सकते हैं।

(2) (क) सभी श्रेणियों के वे अधिकारी/कर्मचारी इस योजना में भाग ले सकते हैं जिनसे सरकारी काम-काज में मूल टिप्पण/आलेखन की अपेक्षा की जाती है।

(ख) आशुलिपिक, टाइपिस्ट, जो सरकारी काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने संबंधी किसी अन्य योजना के अंतगर्तत आते हैं, इस योजना में भाग लेने के पात्र नहीं होंगे।

(ग) हिन्दी अधिकारी और हिन्दी अनुवादक जो सामान्यतः अपना काम हिन्दी में करते हैं, इस योजना में भाग लेने के पात्र नहीं होंगे।

(3) पुरस्कार योजना में भाग लेने वाले कर्मचारियों को प्रतिवर्ष उनके द्वारा हिन्दी में किए गए काम के आधार पर निम्नलिखित नकद पुरस्कार दिए जा सकते हैं:—

केंद्रीय सरकार के प्रत्येक मंत्रालय/विभाग/संबद्ध कार्यालय के लिए स्वतंत्र रूप से—

प्रथम पुरस्कार (2 पुरस्कार) : प्रत्येक रु० 500/-
द्वितीय पुरस्कार (3 पुरस्कार) : प्रत्येक रु० 300/-
तृतीय पुरस्कार (5 पुरस्कार) : प्रत्येक रु० 150/-

केंद्रीय सरकार के किसी विभाग के प्रत्येक अधीनस्थ कार्यालय के लिए स्वतंत्र रूप से—

प्रथम पुरस्कार (2 पुरस्कार) : प्रत्येक रु० 400/-
द्वितीय पुरस्कार (3 पुरस्कार) : प्रत्येक रु० 200/-
तृतीय पुरस्कार (5 पुरस्कार) : प्रत्येक रु० 150/-
[(का.ज्ञा.सं. 12013/1/84-रा.भा. (क-2) दिनांक 25.5.84]

2.3 विशिष्ट क्षेत्रों में मूल कार्य हिन्दी में करने के लिए पुरस्कार योजना

कुछ प्रतिष्ठानों/कार्यालयों में वैज्ञानिकों, तकनीशियनों, प्रचालन कर्मचारियों द्वारा विशिष्ट प्रकार के कार्य किए जाते हैं। उनके लिए भी उचित प्रोत्साहन योजनाएं चालू किए जाने का प्रावधान है जो संबंधित मंत्रालय/विभाग/उपक्रम आदि द्वारा शुरू की जानी चाहिए।

2.4 अंग्रेजी टाईपिस्टों, आशुलिपिकों को हिन्दी में टाइपलेखन और आशुलिपि कार्य करने के लिए ''प्रोत्साहन भत्ता''

मंत्रालयों, विभागों तथा उनके संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों में कार्य कर रहे उन आशुलिपिकों और टाइपिस्टों को, जो अंग्रेजी टाइप/आशुलिपि जानते हैं और अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी में भी अपना सरकारी कार्य करते हैं, क्रमशः 60/- रुपये तथा 40/- रुपये प्रतिमास विशेष भत्ता दिया जाता है। केवल वे ही अंग्रेजी टाइपिस्ट/आशुलिपिक इस भत्ते के पात्र होंगे जो हिन्दी में औसतन 5 टिप्पणियां/प्रारूप/पत्र प्रतिदिन अथवा लगभग 300 टिप्पणियां/प्रारूप/पत्र प्रति तिमाही टंकित करते हैं। केवल एक या दो पंक्तियों के प्रारूप/टिप्पणियां इसमें शामिल नहीं होंगी। यह विशेष भत्ता ''वेतन'' नहीं माना जाएगा और इस राशि पर महंगाई भत्ता, मकान किराया भत्ता, नगर प्रतिकर भत्ता और अन्य भत्ते देय नहीं होंगे।

[का.ज्ञा.सं. 3034×31/रा.भा. (ग) दिनांक 16.7.87]

2.5 सबसे अच्छा कार्य करने वाली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को पुरस्कार देने की योजना

दिल्ली के बाहर प्रमुख नगरों में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में हिन्दी कार्य की प्रगति की समीक्षा करने और समस्याओं पर विचार करने के लिए ऐसे नगरों में जहां कम से कम 10 केंद्रीय सरकार के कार्यालय हैं, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां बनाई गई हैं। इन समितियों की अध्यक्षता नगर के वरिष्ठतम अधिकारी करते हैं। नगर में स्थित केंद्रीय सरकार के सभी कार्यालयों के प्रतिनिधि इन समितियों की बैठकों में सम्मिलित होते हैं। हिन्दी में सबसे अच्छा कार्य करने वाली नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति को प्रोत्साहन स्वरूप पुरस्कार दिए जाते हैं।

" फिर विकल हैं प्राण मेरे
तोड़ दो यह क्षितिज मैं भी
देखलूं उसपार क्या है ?
जा रहे जिस पंथ से युग--
कल्प उसका सार क्या है ?
क्यों मुझे प्राचीर बन कर
आज मेरे श्वास घेरें।"

महादेवी वर्मा

Printed at : Shalimar Art Press, Srinagar